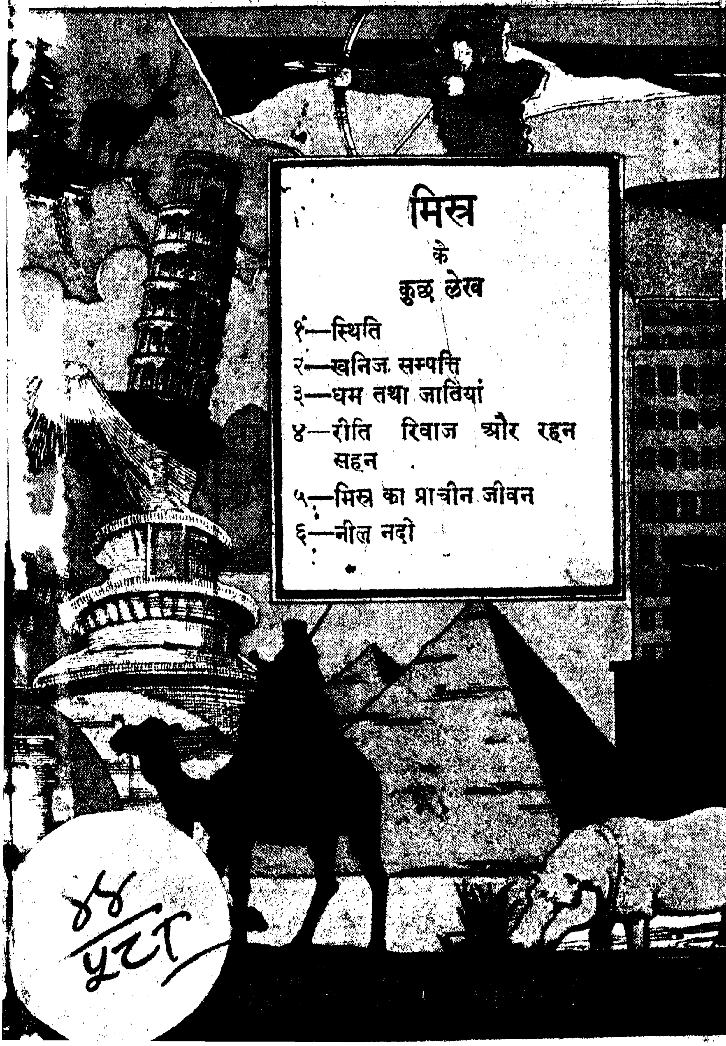
देश दर्शन

मिस्र



मिस्र
के
कुछ लेख

१—स्थिति

२—खनिज सम्पत्ति

३—धम तथा जातियां

४—रीति रिवाज और रहन सहन

५—मिस्र का प्राचीन जीवन

६—नील नदी

४४ पृष्ठ

जनवरी १९४०]

देश-दर्शन

[पौष १९९६

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या ८]

मिस्र—१

[वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—स्थिति	...	...	१
२—जलवायु	...	...	८
३—खनिज सम्पत्ति	...	...	१०
४—संक्षिप्त इतिहास	...	...	१२
५—धर्म तथा जातियां	...	...	३९
६—रीति रिवाज और रहन-सहन		...	४१
७—मिस्र का प्राचीन जीवन		...	४८
८—मिस्र देश की भाषा		...	५५
९—आने जाने के साधन		...	५७
१०—व्यापार	...	...	५९
११—मिस्र देश के नगर		...	६१
१२—नील नदी	...	...	६६

स्थिति

मिस्र देश अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी-पूर्वी सिरे पर स्थित है। इसके उत्तर में रूमसागर, दक्षिण में सूडान, उत्तर-पूर्व में पैलेस्टाइन, पूर्व में लालसागर और पश्चिम में ट्रिपोली और सहारा का रेगिस्तान है।

मिस्र देश का क्षेत्रफल ३,८६,००० वर्गमील और जनसंख्या १,४७,६८,५७६ है। क्षेत्रफल का १४/१५ भाग रेगिस्तान है। नहरों, सड़कों और छुहारे के बागों से १६०० वर्गमील जगह घिरी है। नील नदी, दलदल और झीलों का क्षेत्रफल २८५० मील है। १२,००० वर्गमील भूमि खेती के योग्य है। यदि केरो (क़हरा) के दक्षिण से एक रेखा खींची जाय तो वह मिस्र को दो भाग में बांट देगी। यह दोनों भाग, मिस्र का नीचा प्रदेश (डेल्टा) तथा ऊंचा प्रदेश (नील की घाटी) के नाम से प्रसिद्ध है। अरबी लोग नीचे प्रदेश को अर्-रिफ (उपजाऊ) तथा ऊँचे प्रदेश को अस-सईद (भाग्यशाली) कहते हैं। कुछ लोग मिस्र को ऊपरी मध्यवर्ती और निचले तीन भागों में बाँटते हैं। इस बाँट के अनुसार मध्यवर्ती भाग में केरो और एस्यट के बीच वाले प्रान्त हैं।

प्राकृतिक वर्णन :—प्राकृतिक दृष्टि से मिस्र

के दो ही भाग हैं। (१) नील नदी (२) रेगिस्तान। यदि नील नदी न होती तो सहारा के बड़े रेगिस्तान से मिस्र देश का अलग करना कठिन हो जाता। नील नदी रेगिस्तान के मध्यवर्ती भाग को चीरती हुई आती है। यह अपने साथ एबीसीनिया के ऊँचे प्रदेशों से कछारी मिट्टी ले आती है और हर साल उसे अपने इधर उधर छोड़ देती है। नील नदी ने डेल्टा तथा ऊपरी मिस्र के प्रान्त को उपजाऊ बना रक्खा है। डेल्टा की भूमि समतल तथा उपजाऊ है। यहां खेती खूब होती है। इस भाग के पुराने नगर तथा गांव काले-भूरे टीलों पर स्थित हैं। गांव के चारों ओर छुहारे के बाग हैं। नील की घाटी निचली पर्वतीय श्रेणियों से घिरी हुई है। यह पहाड़ियां रेगिस्तान के किनारे का काम करती हैं। नील की घाटी की तह बराबर पहाड़ी चट्टान की बनी है। यहां के खेतों का रंग हरा चमकीला, नील नदी का रंग लाल-भूरा और नंगी चट्टानों का रंग पीला दिखाई पड़ता है।

समुद्री-तट :—मिस्र देश का रूम सागर का तट ६०० मील लम्बा और लाल सागर का तट १२०० मील लम्बा है। रूमसागर का तट सोल्लुम खाड़ी से

राफा तक है। सोल्लुम से नील नदी के डेल्टा तक समुद्री तट समतल है और अच्छे बन्दरगाह नहीं है। यह भाग पठारी है और दक्षिण की ओर रेगिस्तान है। डेल्टा की भूमि बलुआ पत्थर तथा चूने वाले पत्थर की बनी है। नील के मुहाने पर कछारी भूमि है। इसके आगे का तटीय प्रदेश पहाड़ी है बन्दरगाह अच्छे नहीं हैं। लालसागर का तट भी पहाड़ी है। यह पहाड़ी श्रेणियां एबीसोनिया के पर्वतों से मिली हैं। इसकी चोटियां ६००० फुट तक ऊंची हैं।

नील की घाटी :—दूसरे प्रपात के उत्तर की ओर नील की घाटी बहुत सकरी है, यहां पर घाटी केवल २ मील चौड़ी है। इस भाग में नदी की गहराई १०० फुट से भी अधिक है। इस भाग में बहुत से छोटे छोटे प्रपात हैं। रिफ्ट घाटी का प्रदेश लगभग ५१८ मील लम्बा है। इस भाग में खड़ी सीधी चट्टानों से घाटी घिरी है। एसना और केना के बीच पर्वतों की ऊँचाई १०,८० फुट तक है। इस भाग में खेती वाले प्रदेश की चौड़ाई लगभग १० मील है। खेती वाली भूमि का अधिकाँश भाग नदी के बाएं तट पर स्थित है।

देश दर्शन

नील नदी के पश्चिम की ओर फयूम स्थित है, जहाँ पर बरकेटेल कुरूम (मीठे पानी की झील) है। इस भाग में नील नदी की एक शाखा बहती है, जिसको बहेर-यूसुफ कहते हैं। इसी भाग में लाहुन और हवारा के पिरेमिड हैं। नील की घाटी की अधिकांश भूमि में पहाड़ियां तथा रेगिस्तान हैं।

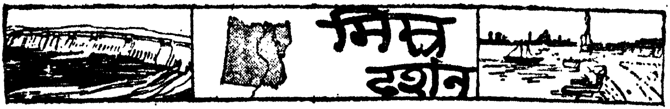
डेल्टा :—सिकन्दरिया से पोर्ट सईद तक इस की लम्बाई १५५ मील है। उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई ०० मील है। डेल्टा कछारी भूमि का बना है। यह मैदान उत्तर की ओर नीचा होता गया है। डेल्टा का ऊपरी धरातल बड़ा उपजाऊ है। यह भाग हमीशिया और रोज़ेटा (नील की शाखाओं) नदियों से सींचा जाता है। इस भाग में बहुत सी नहरें भी बनी हैं।

झीलें :—डेल्टा वाले प्रदेश में मारियोटिस, एडकूबर्लस और मेन्ज़ाला झीलें हैं। इन झीलों तथा रूम सागर के बीच कहीं भी भूमि की चौड़ाई १० मील से अधिक नहीं हैं। कहीं कहीं पर तो यह चौड़ाई केवल कुछ सौ गज ही है। इन झीलों का पानी खारा तथा नमकीन है। बाढ़ के दिनों में मारियोटिस झील

१०० वर्गमील में फैल जाती है। इस झील के पानी को सुखा कर नमक बनाया जाता है। मारियोटिस के पूर्व की ओर एडकू है। यह २२ मील लम्बी और लगभग १६ मील चौड़ी है। बर्लस झील ६४ मील धनुषाकार लम्बी और १६ मील चौड़ी है। यह झील अपने तरबूजों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। इन तरबूजों का गूदा पीले रंग का होता है। मंज़ाला झील ७८० वर्गमील में फैली है। यह डेमयटा से पोर्टसईद तक फैली हुई है। यह एक पतली भूमि की पट्टी द्वारा समुद्र से अलग है। इसके पूर्वी किनारे स्वेज़ नहर जाती है। इस झील में बहुत से द्वीप हैं। टेन्निस द्वीप बहुत पुराना है, जहां पर रोमन काल के खंडहर हैं। इसके किनारे के गाँवों के रहने वाले इसी झील से मछली मार कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इस झील में रंग विरंगे पक्षी पाए जाते हैं। झील के दक्षिण की ओर रीछ पाये जाते हैं। इसके सिवा सेरबोनिस, टिमसा, ग्रेट (बड़ी) और लिटिल (छोटी) कड़वी झीलें हैं। स्वेज नदी द्वारा लाल सागर का पानी इन झीलों में आता है। केरो से उत्तर-पश्चिम लगभग ७० मील की दूरी पर नाटरोन की की ७ झीलें हैं। यह झील फयूम प्रान्त में स्थित हैं।

यह झील ३० मील लम्बी और ५ मील चौड़ी है। इनके किनारे प्राचीन नगर बसे हैं जिनसे नगर कराकरूम नगर सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

पठारी रेगिस्तान:—यह पठारी रेगिस्तान मिस्र के दक्षिणी भाग से डेल्टा तक नील नदी के दोनों ओर फैला हुआ है। इसका पूर्वी भाग जो नील नदी और लाल सागर के मध्य स्थित है ६० से ३५० मील तक चौड़ा है। इसका उत्तरी भाग अरबी रेगिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। पश्चिमी भाग का अधिकांश भाग सहारा के बड़े रेगिस्तान का एक भाग है। स्वान के उत्तर भाग लिबयन का रेगिस्तान कहलाता है। केरो से दक्षिण की ओर इस पर्वतीय रेगिस्तान की ऊंचाई १००० फुट से १५०० फुट तक है। इस भाग में छोटी छोटी पर्वतीय घाटियां बहुत है। रात में पर्वतीय चट्टानें शीघ्र ही ठंडी और दिन में शीघ ही गरम हो जाती हैं। इस ओर बालू के बड़े बड़े ढेर हैं। कहीं कहीं पर ये बालू के ढेर इतने बड़े हैं कि इनका पार करना दुर्लभ है। बहारिया और फराफ्रा ओसिस के पूर्व की ओर इन बालू के टीलों की लम्बी लाइन है। इसकी कुल लम्बाई ५५० मील और चौड़ाई ३ मील है।

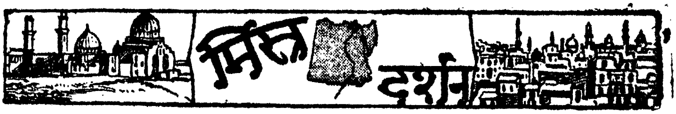


ओसिस या नखलिस्तान :—पश्चिमी रेगिस्तान में मिस्र देश के पांच बड़े नखलिस्तान सीवा, बहारिया फराफ्रा, डखला और काग्रा हैं। इस भाग में बलुआ पत्थर की चट्टान है। यह चट्टान धरातल के ३०० से ५०० फुट नीचे पाई जाती है। इस चट्टान का पानी स्वयं ऊपर निकल आता है और इसी पानी के कारण ये ओसिस हरे भरे रहते हैं। इन ओसिसों में लोग बोरिंग कर के भी पानी निकालते हैं। यूनानी लोगों ने इन ओसिस पर १०० वर्ष ईसा से पूर्व अपना अधिकार कर रक्खा था। इन में प्राचीन स्मारक बहुत हैं।

साइनाई प्रायद्वीप :—यह प्रायद्वीप तिकोना है। इसका आधार रूमसागर पर है। टीह का रेगिस्तान पठारी है। यहां पर ८५०० फुट तक की ऊंची पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों के बीच नदी कहीं पर्वतीय सरोवर है, जो वर्षा के पानी द्वारा भर जाते हैं, और उनका पानी घूमने वाले अरबी लोगों के पीने का सहारा होता है। उत्तर की ओर रूम सागर के समीप यहां पर बहुत से मृगजल (धोके जहां पानी दिखाई पड़ता है किन्तु पानी नहीं रहता) हैं। इनका वृत्तान्त प्राचीन कहानियों में आता है।

जलवायु

मिस्र का उत्तरी कुछ भाग अयन सीमा में है, किन्तु अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर की ओर स्थित है। मिस्र देश ऐसे भाग में स्थित है, जहां बिल्कुल वर्षा नहीं होती। यह भाग दिन में काफी गर्म रहते हैं। रात के समय एकबारगी गरमी कम हो जाती है और सरदी पड़ने लगती है। पोर्ट सईद और सिकन्दरिया या जनवरी का तापक्रम ५७ फा० और जूलाई का तापक्रम फा० ८१ है। केरो का जनवरी का तापक्रम ५३ फा० और जूलाई का ८४ फा० है। यहां जनवरी का महीना साल में सब से अधिक ठंडा महीना होता है। इस महीने में नील की घाटी और खुले रेगिस्तान में तापक्रम ३२ फा० और इससे भी कभी कभी कम हो जाता है। असवान में सब से ऊंचा तापक्रम ११८ और सब से नीचा ताप ४२ फा० है। सिकन्दरिया और रूमसागर के तटीय प्रान्तों में जाड़े में वर्षा ८ से १२ इन्च तक होती है। दक्षिण की ओर वर्षा कम होती जाती है और बहुत कम पानी बरसता है। केरो के वर्षा तापने वाले यंत्र से पता लगता है कि वर्षा मिस्र में बहुत कम होती है वर्षा का समय भी ठीक नियत नहीं है। अधिकतर वर्षा



तूफानों के आने पर होता है। ऊंचे पर्वतों पर बरफ पड़ती है। केरो में जाड़े के दिनों में तेज हवा चलती है। गरमी के महीने में दक्षिण तथा पश्चिम की ओर से आंधियां और तीव्र हवायें चला करती हैं। इन दिनों में वायु का प्रकोप इतना अधिक होता है, कि बालू के बड़े बड़े ढेर लग जाते हैं। यहां पर एक प्रकार की जोबा (बवंडर) हवा चलती है, जिससे बालू चक्कर दार हवा के कारण घूमती हुई बहुत ऊंची उड़ती है। यह हवा एक बड़े स्तम्भ का भांति चलती है और इसका प्रकोप बड़ा तेज होता है।

देश दर्शन

खनिज सम्पत्ति

मिस्र देश खनिज सम्पत्ति में बड़ा धनी है। प्राचीन समय में लाल सागर के किनारे वाली पहाड़ियों से सोना तथा हीरा जवाहिरात निकाले जाते थे। यहां मैंगनीज़ पिछले दस सालों से निकाला जा रहा है और काफी मात्रा में निकलता है। पेट्रोल (मिट्टी का तेल) भी निकाला जाता है। १९२६ ई० में यहां १७३,००० टन पेट्रोल निकाला गया था। मारियोटिस झील से नमक निकाला जाता है जो मिस्र देश के खर्च के लिये काफी होता है और कुछ थोड़ा बाहर भेजा जाता है। नाटरोन की वादी में कार-बोनेट सोडा निकलता है। पश्चिमी ओसिस में फिटकरी पाई जाती है। रेगिस्तानों में शोरा पाया जाता है। इसकी खाद बनाई जाती है। साइनाई, वादी मघारा में पीरोजा, और जेबेल, जुबारा में हीरे जवाहिरात निकाले जाते हैं। इसके सिवा और भी बहुत से स्थानों पर बहुमूल्य पत्थर पाए जाते हैं। सुन्दर मकान बनाने के पत्थर भी कई स्थानों पर निकाले जाते हैं। यहाँ के प्राचीन स्मारक यहीं के पत्थरों के बने हैं।

मिस्र में बन तथा जंगल नहीं हैं। यहाँ सब से



प्रसिद्ध छुहारे का पेड़ है। यह मिस्र के सभी भागों में पाया जाता है। अंगूर के बाग भी बहुत हैं। संतरा, शहतूत, अंजीर शफतालू, चकोतरा, खूबानी, नीबू, अनार, केला आदि फल मिस्र में पैदा किये जाते हैं। यहां कई प्रकार के तरबूज पेदा होते हैं। यह यहां की प्रधान उपज में है। रेगिस्तानों में अल्फा घास तथा भांति भांति की झाड़ियां पाई जाती हैं। फूल भी कई प्रकार के उगाये जाते हैं। गुलाब के फूल को अरब लोग बहुत पसन्द करते हैं। डेल्टा में कमल का फूल बहुत पाया जाता है। इसको भी अरबी लोग बहुत पसन्द करते हैं।

ऊंट यहां का मुख्य जानवर है। बारबरदारी तथा सवारी दोनों का काम देता है। इसके सिवा भैंसे, गदहा बैल, गाय आदि जानवर भी होते हैं। कहीं कहीं भेड़े भी पाली जाती है। जंगलों में जेरबोआ, सांप, रीछ भैंसे, भेड़िया आदि जानवर पाए जाते हैं। नील नदी की घाटी में लगभग ३०० किस्म की चिड़िया पाई जाती हैं।

★ ★ ★

संक्षिप्त इतिहास

पूर्व ऐतिहासिक काल:—प्राचीन रीत रिवाजों, क़िस्से और कहानियों से मिस्र के पूर्व ऐतिहासिक काल का वर्णन मिलना सम्भव हो गया है। मेनेस नामक व्यक्ति ने सर्व प्रथम राजवंश की नीव डाली थी। उसने अपने समय में उत्तरी तथा दक्षिणी मिस्र को मिला कर एक राज्य स्थापित किया था। उत्तरी मिस्र की राजधानी उस काल में नैखेब और दक्षिणी मिस्र की राजधानी बूटो थी। एल काब उत्तरी अथवा पश्चिमी राज्य की देवी और बूटो देवी तथा होरस (सूर्य) दक्षिणी मिस्र के देवता माने जाते थे। राजघराने के देवता होरस ही माने जाते थे। राजा अपने को होरस का पुत्र मानता था।

प्राचीन काल:—इस काल में आहा प्रसिद्ध राजा हुआ था। इसका नाम नगादा और अबीडोस के गुम्बदों में पाया जाता है। इस काल में शिला लेख तथा मूर्तियों और मन्दिरों के बनाने का रिवाज अधिक हो गया था। ज़ोसेर राजा ने सक्कारा का पिरेमिड बनवाया था। स्नेफ्रू इस काल का प्रसिद्ध राजा था। इसके समय में देवदार की लकड़ी की नावें तथा द्वार बनाए जाने

लगे थे। इसने दो पिरेमिड मीडीज़ और दाशूर स्थान पर बनवाए थे। यह दोनों पिरेमिड मेम्फीस और फयूम के मध्य में स्थित हैं।

पिरेमिड काल:—तीसरे राज वंश के अन्तिम काल से छठवें राजवंश काल तक पिरेमिड काल कहा जाता है। चौथे राज वंश के राजा चेफरिन और माइ-सेरीनस बड़े प्रसिद्ध थे। इन्होंने गीज़ा के प्रसिद्ध द्वितीय तथा तृतीय पिरेमिड बनवाये थे। इस काल की पत्थर की कला बड़ी ही सुन्दर अद्वितीय है। चेफरेन की मूर्ति बड़ी ही प्रसिद्ध मूर्ति है। चेओप्स तथा चेफरेन के मध्य-वर्ती काल में डेफेरे नामक राजा हुआ था, जिसने अबू रोशा का पिरेमिड बनवाया था। शेपसेसकाफ इस वंश का अंतिम राजा था। वादी मधारा में इस काल में बहुत से मन्दिर तथा इमारते ऐसी बनाई गई हैं, जो उस समय की सभ्यता तथा कला कौशल और शिल्पकारी की गवाही हैं।

पाँचवा राजवंश एलीफैन्टाइन का था। इस वंश के राजा 'रीह' की पूजा करते थे और इनकी उपाधि सूर्य के पौत्र (पुत्र के पुत्र) की थी। सहोर के पिरेमिड इसी

वंश के राजाओं ने बनवाये थे। सकारा के यूनास मन्दिरों में रीत-रिवाज और जादू वाली भाषाए खुदी हैं।

छठें राजवंश में पेरी या फियेक्स नामक राजा बड़ा प्रतापी पैदा हुआ था। इसने सकारा के पिरेमिड बनवाये थे। सकारा नगर इसकी राजधानी थी। इनको "व्हाइट वाल्स" (स्वेत दीवारें) भी कहते हैं। एस्यूत के शाहज़ादे का पिरेमिड मेम्फीस में बना है। हेलियो-पोलिस ने मोयरिस झील का बाँध बनवाना आरम्भ किया था, उसको आमेनेनहे त्रितीय ने पूरा किया था। इसने अपने ४६ साल के राज्य काल में दाहशूर और हवारा के पिरेमिड बनवाये थे। लाबीरिन्थ का मन्दिर भी इसी राजा का बनवाया हुआ है।

न्यू इम्पायर (नया साम्राज्य):—अठारहवें राजवंश की नीव अहमोसी ने डाली थी। यह नया साम्राज्य इस लिये कहलाता है, कि इस वंश के राजाओं ने दूसरे देशों पर आक्रमण करना आरम्भ किया था और अपने राज्य को सीमित न रख कर अधिक बढ़ाया था।

टूथमोसिस प्रथम ईसा के १५४० वर्ष पूर्व राजा हुआ, इसको अपनी स्त्री अहमोसी द्वारा गद्दी पर बैठा था।



हातशेपसूत नामक रानी अपने पति के मृत्यु के बाद ईसा से १५०० वर्ष पूर्व गद्दी पर थी। स्मारकों में इसका भेष राजा का दिखाया गया है। आमेन-ओफिस तृतीय १४०० वर्ष ईसा के पूर्व गद्दी पर बैठा। इसने बहुत सी इमारतें, स्मारक तथा मन्दिर बनवाये थे। लक्सोर इसी का बनवाया हुआ है। इसने अपनी शादी ताइया नामक एक नीच वंश की लड़की के साथ की। १२५० ई० पू० रेमसेस राज्य करता था, जब कि हिट्टाइट राजा खात्तूसिल अपने मित्र राजा कोडे के साथ विचित्र मिस्र देश को देखने के लिये आया था। रेमसेस के बाद उसका पुत्र माइनेपताह गद्दी पर बैठा। इसके पश्चात् रेमसेस नाम के बहुत से राजा हुए जिन्होंने ११०० ई० पू० तक राज्य किया।

लिबियन बंश का राज्य लगभग ८०० साल तक रहा। इस वंश में स्मेन्डेस, प्समेटीचस, नेको राजा हुए। सीरियन, थीबी जातियों का राज्य भी कुछ समय तक रहा। इथोपिया के राजों ने भी कुछ काल तक राज्य किया।

सिकन्दर का आक्रमण:—ईसस के युद्ध के

पश्चात् ३३२ बर्ष ईसा के पूर्व सिकन्दर ने मिस्र देश पर आक्रमण किया। सिकन्दर का मिस्र देश में बड़ा स्वागत किया गया। कोई भी राजा या सर्दार सिकन्दर के विरुद्ध नहीं लड़ा। मेम्फीस को देखने के पश्चात् सिकन्दर ने सिकन्दरिया नगर बसाया और फिर एम्मन की तीर्थ यात्रा करने चला गया। एम्मन में देवता ने सिकन्दर को अपना पुत्र कह कर आकाशवाणी की थी। मिस्र राज्य को दो सर्दारों के जिम्मे करके सिकन्दर ३३१ बर्ष ई० पू० लौट कर फोनीशिया चला गया।

टालेमिक काल :—सिकन्दर के राज्य का जब बँटवारा हुआ तो मिस्र देश प्टोलेमी के हाथों में आया। टालेमी लागस का पुत्र था। टालेमी ने टालेमिक वंश की नींव डाली। इस काल में प्रधान अफ़सर सभी यूनानी थे। मिस्र देश के देवी देवताओं के बहुत से मन्दिर इस काल में बनाये गये। फिलाडेलफस, फिलो-पेटर, लाथीरस, टालेमी ओलेटीज़, क्लोपैट्रा आदि इस काल के प्रसिद्ध राजा हुए हैं।

रोमन काल :—३० वर्ष ईसा के पूर्व मिस्र देश अगस्टस के हाथ में आया। अगस्टस को यह देश



पारितोषिक रूप मिला था। इसलिये अगस्टस ने मिस्र राज्य को सीनेट से अलग रखा। अगस्टस ने टालेमिक संस्थाओं को बर्बाद नहीं किया, वरन् प्रधान स्थानों में रोमन लोगों की नियुक्ति कर दी थी। मिस्र देश से ही गल्ला रोम को जाता था। इसलिये कोई भी सीनेट का आदमी वहाँ मिस्र के निवासियों के रक्षा के विरुद्ध नहीं जा सकता था। रोम के महाराजाधिराज की ओर से एक प्रीफेक्ट (सरदार) मिस्र का राज्य करने के लिये भेजा जाता था। एलियस गालस ने भारतवर्ष के साथ मसालों का व्यापार करना आरम्भ किया था। क्लाडियस के समय भारत का व्यापार मिस्र के साथ होने लगा और लालसागर के मार्ग का सुधार किया गया। १३० ई० के लगभग से ग्रीको-रोमन शिल्पकला की शैली का आरम्भ हुआ। पेस्केनियस निगरे के समय में ईसाइयों के ऊपर पहले पहल अत्याचार आरम्भ हुआ। डिओक्लेशियन ने २९६ ई० में मिस्र आकर अपना अधिकार जमाया। उसी समय पापिआई का स्तम्भ खड़ा किया गया था। डिओक्लेशियन २८४ ई० में गद्दी पर बैठा। ३०३ ई० में ईसाइयों के विरुद्ध घोषणाएँ की गईं। उस समय मिस्र में भूत पिशाचों की पूजा प्रचलित थी।

गलेरियस, डिओक्लेशियन के बाद राजा हुआ। उसने भी ईसाइयों के साथ पहले की भाँति व्यवहार किया और बहुतों का वध कराया। थियोडोसियस प्रथम के समय में एरियन धर्म का नाश मिस्र देश से किया गया और पैगन धर्म (भूत पिशाच के पूजने वाले) धर्म के ऊपर अत्याचार आरम्भ हुआ। ३८६ ई० में ईसाइयों ने सिकन्दरिया के सेरापिस मन्दिर पर अधिकार जमाकर उसे चर्च बना डाला। सिकन्दरिया के सीरिल नामक चर्च अफसर ने ईसाई जनता की सहायता से यहूदियों को सिकन्दरिया से मार भगाया।

इसके पश्चात् मिस्र में गृह-कलह आरम्भ हो गई और प्रजा की रक्षा करना बड़ा कठिन हो गया। ऐसी बुरी दशा में ६१६ ई० में चोसरोइस ने मिस्र को बिना किसी युद्ध के ही अपने अधिकार में कर लिया। १० साल तक मिस्र उसके (तुर्किस्तान) अधिकार में रहा। इसके बाद हरकुलीज़ ने मिस्र को जीत कर फिर रोमन राज्य में मिला दिया। कानोफिसाइट लोग जिन्होंने तुर्की राज्य से बेजा लाभ उठाया था, उनके ऊपर बड़ा अत्याचार किया और उन्हें

चुन चुन कर सज़ाएँ दी गईं और क़त्ल किया गया। मिस्र के ईसाइयों ने अरबी राज्य का स्वागत किया था, किन्तु उसके साथ साथ उनका भी अन्त हो गया।

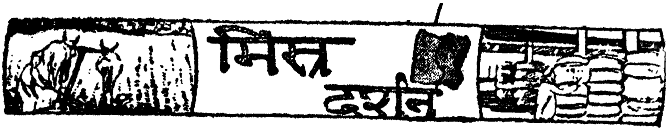
रोमन राज्य मिस्र में तलवार के ज़ोर से स्थापित किया गया था। इसलिये जहाँ पर फौजें तथा क़िले थे, वहाँ पर शान्ति रहती थी। इसी कारण मिस्र देश पर मुसलमानों का अधिकार सरलता पूर्वक हो गया।

सन् ६३६ ई० मुसलमानों के खलीफा उमर ने आम्र नामक सरदार की अध्यक्षता में ४००० सेना मिस्र पर अधिकार जमाने के लिये रवाना की। आम्र सीरिया से रवाना हुआ और अल् अरीश होता हुआ पेल्यूज़ियम या फारमा को लेने के बाद उसने बिलबीस पर अधिकार जमाथा। इसके बाद उसने उम्म स्थान पर घेरा डाला, उम्म लेने के बाद फयूम स्थान पार किया। ६४० ई० में खलीफा उमर ने १२००० सैनिकों की दूसरी सेना मिस्र पर अधिकार करने के लिये भेजी। जब यह सेना हेलियोपोलिस पहुँची तो आम्र भी नील नदी पार करके आ गया। हेलियोपोलिस में रोमन सेना से युद्ध हुआ किन्तु रोमन सेना की हार हुई। मुसलमानी सेना ने

बढ़कर बाबुलमन्दब पर अधिकार जमाया और सिकन्दरिया की ओर बढ़ी। ८ नवम्बर सन् ६४१ ई० को सिकन्दरिया भी अधिकार में आ गया। इसके बाद रोमन लोगों ने कई बार मिस्र को मुसलमानों से छीनने के लिये प्रयत्न किया किन्तु वे असफल रहे। मुसलमानों ने ईसाइयों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर दी, और धार्मिक अत्याचार न करते हुये अपना राज्य करने लगे।

मिस्र देश का राज्य ६३१ से ६६८ ई० तक पूर्वी खलीफों के अधिकार में रहा। ६६६ ई० में जौहर ने मिस्र को म्वाइज्ज (पश्चिमी) खलीफा के लिये जीत लिया। पश्चिमी खलीफा ने केरो को अपनी राजधानी बनाया था। इस वंश ने ११७२ ई० तक राज्य किया। इसके पश्चात् अय्यूबी वंश का राज्य हुआ। अय्यूबी वंश ने भी १२५२ तक अपना राज्य किया। फिर बहरी वंश ने १३८२ तक और बुर्जी वंश ने १५१७ तक राज्य किया।

१५१७ ई० में मिस्र राज्य आटोमन राज्य में मिला लिया गया। आटोमन काल में मिस्र देश के लिये गवर्नर कुस्तुन्तुनिया से भेजे जाते थे। १७०७ ई० के



बाद ओटोमन राज्य का प्रभाव कम हो गया और ममलूकी लोग राज्य करने के लिये चुने जाने लगे। ममलूकी सरदारों की उपाधि शेख-अल-बलाद की हुआ करती थी।

इब्राहीम और मुराद जब राज्य कर रहे थे उसी समय नैपोलियन ने मिस्र पर आक्रमण किया। नैपोलियन ने मिस्र में पहुँचकर घोषणा की कि वह पैगम्बर मोहम्मद की शिक्षा को मानने वाला है। नैपोलियन ने सभी धर्म वालों के लिये सरकारी नौकरियां खोल दीं। २२ अक्तूबर सन् १७९८ ई० को केरो में बलवा हो गया। इस गदर में केरो का फ्रान्सीसी गवर्नर मारा गया। जब बोनापार्ट ने इसका हाल सुना तो उसने शीघ्र ही प्रयत्न किया और जनरल जे० बी० क्लेबेट के पहुँच जाने से शान्ति स्थापित हुई। जुलाई सन् १७९९ ई० में नैपोलियन ने तुर्की सेना को अबूकर स्थान पर पराजित किया। अँग्रेजी जल-सेना ने तुर्की का साथ दिया था।

इस जीत के कुछ ही समय बाद क्लेबेर के हाथों मिस्र का प्रबन्ध सौंप कर नैपोलियन लौट गया। २४

जनवरी सन् १८०० ई० में तुर्कों और फ्रान्सीसियों के बीच एक संधि हुई जिसके अनुसार फ्रान्सीसियों ने मिस्र छोड़ देने का वादा किया। किन्तु इसी बीच अंग्रेज़ी कमांडर सर सिडनी को इंगलैण्ड से आज्ञा मिली कि वह सभी फ्रान्सीसियों को कैदी बना ले। क्लेबेर ने इस आज्ञा को (जब उसे दिखाई गई) नहीं माना। जून के महीने में अलप्पो के सुलेमान ने उसकी हत्या कर डाली।

फ्रान्सीसियों के चले जाने के पश्चात् मिस्र देश की दशा बहुत खराब हो गई। अल्बेनियों तुर्कों में मार काट होने लगी। अल्बेनी और मेमलूकी लोग एक साथ हो कर लड़ रहे थे। बहुत बड़ी मार काट होने के पश्चात् १३ मई सन् १८०५ ई० में मोहम्मद अली बादशाह चुना गया। कुस्तुनतुनिया से भी मोहम्मद अली को गवर्नर होने की आज्ञा प्राप्त हो गई। इसके बाद भी मिस्र में शान्ति न स्थापित हो सकी। अन्त में अलबदीसी और अल-अलफी की मृत्यु हो गई। इस प्रकार मोहम्मद अली को अपने दो प्रधान बैरियों से फ़ुर्सत मिल गई।

१७ मार्च सन् १८०७ ई० में ५००० अंग्रेज़ी सेना

मिस्र पहुँची किन्तु जब उसे अल-अल्फी के मृत्यु का समाचार मिला तो अंग्रेज अफसर ने उसके उत्तराधि-कारी को ढूंढ़ने का प्रयत्न किया, किन्तु मोहम्मद अली ने सबों को मिला लिया। अंग्रेजी सेना के ९०० आदमी लड़ाई में मारे गये।

उसके बाद से ममलूकी सरदारों के वादों को स्वीकृत होने लगी। बहुत से सरदार केरो में आकर रहने लगे। किन्तु मोहम्मद अली के विरुद्ध फिर भी वे लड़ाई लड़ते रहे और एक बार पाशा की सेना को पराजित भी किया। सन् १८११ ई० मोहम्मद अली के पुत्र तुसून को सेनापति बना कर अरब पर आक्रमण करने की तयारी की गई। सेनापति बनाने वाले संस्कार में केरो के सभी ममलूकी सरदार निमंत्रित किये गये। चाय पानी करने के पश्चात् सभी लोग गढ़ की ओर चले। जैसे ही ममलूकी लोग गढ़ के द्वार पर पहुंचे। द्वार एकाएक बन्द कर दिया गया और मेमलूकी सरदारों के ऊपर और पीछे से आग लगा दी गई। वे किसी ओर से भाग न सके। इसके फलस्वरूप ४७० मेमलूकी जलाकर मार डाले गये। इसी प्रकार और दूसरे नगरों में भी हत्या की गई।

इसके बाद मोहम्मद अली ने अपने पुत्र की अध्यक्षता में १०,००० की एक सेना वहबियों के विरुद्ध अरब भेजी। दो साल के पश्चात् मोहम्मद अली ने खुद जाकर मक्का पर अधिकार जमाया और साऊद द्वितीय की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अब्दुल्ला के साथ संधि कर ली। नैपोलियन के छुटकारे का सम्बाद पाकर मोहम्मद अली फिर मिस्र पहुँचा।

१८२० ई० में मोहम्मद अली ने पूर्वी सूदान को जीतने के लिये सेना भेजी। वह सेन्तार की सोने की खानों पर अधिकार करना चाहता था। मोहम्मद अली ने मस्सावा और सुवाकिन (लालसागर के) बन्दरगाहों पर अधिकार जमा लिया।

मोहम्मदअली ने अपनी स्थली सेना को खूब दृढ़ बनाया और उसके पश्चात् जलसेना की ओर ध्यान दिया। उसने मिस्र का एक जहाजी बेड़ा तयार कराया और अपने सैनिकों को योरुपीय ढङ्ग पर शिक्षा दी। मोहम्मद अली को १८२१ ई० में क्रीट की गवर्नरी प्रदान की गई थी। १८२४ ई० में ६० जहाजों का बेड़ा लेकर मोहम्मद अली का पुत्र सूदान की खाड़ी पर आटोमन

साम्राज्य की सहायता के लिये गया। यूनानी लोगों के स्वतंत्रता-युद्ध में अंग्रेज उनकी सहायता कर रहे थे। इसलिये अगस्त सन् १८२८ ई० को एडमिरल सर एडवर्ड काडरिंगटन सिकन्दरिया पहुँचा और पाशा के साथ एक संधि हुई जिसके अनुसार मिस्री सेना वापस बुला ली गई। कुछ दिनों के पश्चात् माहम्मद अली ने सुल्तान के विरुद्ध बलवा कर दिया। इब्राहीम ने अपने पिता मोहम्मद अली के नाम कई एक लड़ाइयां जीतीं। १४ मई सन् १८३३ को मोहम्मद अली और सीरिया, दमिश्क, अलप्पो और अदन का पाशा हो गया।

१८३१-१८४१ तक मोहम्मद अली के कोप के कारण योरुप की स्थिति डाँवाडोल रही। अंग्रेज़ों को दजला की घाटी और लाल सागर होकर भारत जाने का मार्ग मोहम्मद अली के राज्य में ही होकर पड़ता था जो खतरे से खाली न था।

१८४१ ई० में सुल्तान की ओर से फरमान निकाला जिसके अनुसार मिस्र साइनाई अरब और सूदान के तटीय कुछ नगर मोहम्मद अली के पाशाही में दिये गये।

१३ फरवरी सन् १८४१ के फरमान के अनुसार मोहम्मद अली के वंश को मिस्र का राज्य प्रदान किया गया।

मोहम्मद के बुढ़ापे के कारण राज्य का काज इब्राहीम करता था, १८४८ में उसकी मृत्यु हो गई तो ८ महीने मोहम्मद अली ने फिर राजप्रबन्ध किया। २ अगस्त सन् १८४६ ई० को मोहम्मद अली की मृत्यु हो गई और उसका पौत्र अब्बास प्रथम पाशा बना।

मोहम्मदअली के समय में मिस्र देश की उन्नति काफी हुई। उस समय नील नदी के ऊपर अच्छा प्रबन्ध था। मुसलमान तथा ईसाई सभी बिना किसी भय के आ जा सकते थे। शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया, औषधि का ज्ञान भी लोगों ने प्राप्त किया। मोहम्मदअली ने योरुपीय सौदागरों को काफी स्वतंत्रता प्रदान कर दी थी जिससे उन्हें व्यापार करने में कठिनाई नहीं हुई। भारतवर्ष का माल योरुप को मिस्र देश होकर ही जाता सिकन्दरिया के बन्दरगाह को भी फिर से प्रोत्साहन इसी काल में दिया गया था।

जुलाई सन् १८५४ में अब्बास को उसके दो गुलामों ने मार डाला। फिर सईद, इस्माइल, तौफ़ीक़, अब्बास

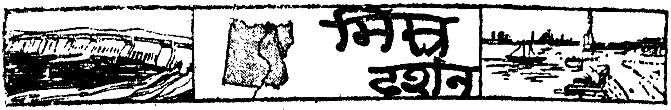
हिल्मी, हुसेन कामिल और फुआद आदि बादशाहों ने मिस्र पर राज्य किया। ये सभी लोग मोहम्मद अली के वंशज थे।

इस्माइल के समय में बहुत से सुधार हुए, जिसके कारण रुपये की बहुत कमी हो गई। सेना, रेल, सड़कें आदि के बनवाने में बहुत खर्च पड़ गया १८६५ ई० में मिस्र का अपना स्वतंत्र पोस्ट आफिस खोला गया। १८६९ में स्वेज़ नहर खोली गई। जब रुपये की बहुत कमी हो गई और रुपया कर्ज़ पर मिलना कठिन हो गया तो बादशाह ने स्वेज़ नहर के १७६,६०२ हिस्से अंग्रेज सरकार के हाथ ३,९७६,५८२ पौंड (५९६४८९३० रु०) में बेंच डाले। कुछ रुपया फ्रांसीसियो से भी कर्ज़ लिया। इस प्रकार योरुपियन प्रभाव बढ़ने लगा। धीरे धीरे योरुपीय लोग राज्य प्रबन्ध में भी लिये जाने लगे। सितम्बर सन् १८७८ ई० में नुबार बादशाह की अध्यक्षता में वैधानिक मन्त्रिमंडल बनाया गया। जिसमें अंग्रेज तथा फ्रांसीसी मंत्री रक्खे गये। सात महीने के पश्चात् इस्माइल ने वैधानिक मिनिस्ट्री को तोड़ दिया और केरो में बलवा हो गया। इंगलैंड और फ्रान्स ने सुल्तान से अपील की। सुल्तान तो चाहता ही था, कि उसको

किसी प्रकार रोक डालने का मौका प्राप्त हो। शीघ्र ही टर्की सुल्तान ने लिख भेजा कि इस्माइल मिस्र का राजा नहीं है वरन् तौफीक वहाँ का राजा है। इस प्रकार का बादशाह तौफीक हुआ।

थोड़े दिनो के पश्चात् इँगलैंड और फ्रान्स ने मिल कर यहाँ दो-अमली हुकूमत स्थापित की। २ साल तक यह हूकूमत रही। इस हुकूमत ने केवल अकेले इंगलैंड के राज्य की नीव डाली। इसी बीच मिस्र के कुछ लोग विदेशी राज्य से घबड़ा उठे और उन्होंने उसे उखाड़ना चाहा। अहमद अरबी नामक व्यक्ति को अपना नेता बना कर उन लोगों ने बलवा कर दिया। मिस्र की सरकार ने अपनी दुर्बलता के कारण बलवा करने वालों की मांगों को पूरा करने का प्रयत्न किया। अरबी को पहले स्थान दिया गया। फिर वह युद्ध मन्त्री बनाया गया और उसके बाद वह मन्त्री बनाया गया किन्तु जैसे जैसे मांगे पूरी होती गईं वैसे वैसे लोगों की मांगें बढ़ती गईं।

अन्त में बड़े ज़ोरों का बलवा हो गया जिसके कारण



अँग्रेज़ी तथा फ्रांसीसी सरकार को अपना अपना जहाजी बेड़ा सिकन्दरिया भेजना पड़ा। अरब लोगों ने सिकन्दरिया नगर में बड़ा कत्ल आम किया। जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों ने क़िले पर गोले बरसाये।

अंग्रेज़ी सरकार ने फ्रांस और इटली से मिस्र के बागियों को दबाने के लिये सहायता मांगी। किन्तु दोनों देशों ने इन्कार कर दिया। अंग्रेजी सेना ने १३ सितम्बर १८८२ ई० में अरबी को तेल-एल-कबीर स्थान पर हराया। शरीफ पाशा की अध्यक्षता में सरकार केरो में बनाई गई, जिसने अरबो तथा उसके साथियों का मुकद्मा किया। लार्ड डफरिन की रिपोर्ट के अनुसार अरबी को देश से निकाल दिया गया और उसके साथियों को भी जीवन दान प्रदान किया गया।

१८८४ ई० में सर ईबलीन बारिंग काउन्सल जनरल बनाया गया। सारा राज्य प्रबन्ध बदल दिया गया और सभी स्थानों पर अंग्रेज़ी अफसरों की नियुक्तियाँ हो गईं। काउन्सल का काम बड़ा कठिन था, क्योंकि उसे अंग्रेज़ी सरकार और मिस्री प्रथा दोनों को खुश रखना था। मिस्री लोग जगह जगह पर अड़चन डालते थे। रुपये की

कमी थी, और राज्य का प्रबन्ध करना बड़ा कठिन हो रहा था। मार्च सन् १८८५ ई० में मिस्र की सरकार को ९०,००,००० पौंड (१३,५०,००,००० रु०) क़र्ज़ लेना पड़ा। इस रुपये से बड़ा लाभ हुआ और मिस्र में सभी ओर सुधार किये गये।

अंग्रेज़ों का मिस्र में रहना ख़तरे से ख़ाली न था। मिस्र टर्की के सुल्तान का देश था। वह अंग्रेज़ सरकार से उसके लिये लड़ सकता था। फ्रान्स आदि दूसरे देश उसकी सहायता कर सकते थे। इसलिये अंग्रेज़ी सरकार शीघ्र से शीघ्र मिस्र का राज्य मिस्री लोगों के हाथों में सौंपना चाहती थी। इसलिये अंग्रेज़ो सरकार ने तुर्की सरकार के साथ सन्धि की, जिसके अनुसार अंग्रेज़ी सेना ने मिस्र छोड़ दिया और वादा किया कि तीन साल के भीतर वे मिस्र छोड़ देंगे। हाँ यदि भीतरी शान्ति में गड़बड़ी होगी या बाहरी आक्रमण की शंका होगी तो अवश्य अंग्रेज़ी सरकार समय बढ़ा सकती है।

२१ मार्च सन् १८९९ ई० के संधि के अनुसार कांगो स्वतन्त्र राज्य और मिस्री-ट्रिपोली राज्य के बीच सीमा बना दी गई। १९ जनवरी सन् १८९९ ई० के



संधि के अनुसार सूडान का राज्य अंग्रेज़ और मिस्रियों के अधिकार में दिया गया। सूडान में मिस्री तथा अंग्रेज़ी दोनों झंडे साथ साथ प्रयोग किये जाने की शर्त मानी गई और गवर्नर जनरल को सर्वाधिकार दिये गये। गवर्नर जनरल की नियुक्ति मिस्र सरकार की ओर से ब्रिटिश सरकार की अनुमति के अनुसार होगी।

राष्ट्रवादियों की पार्टी मुस्तफ़ा कामिल की अध्यक्षता में मिस्र के लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही थी। मिस्र के राष्ट्रीय पत्रों ने मिस्र की प्रजा के बीच ईसाइयों तथा योरुपियनों के विरुद्ध खूब प्रचार कर रखा था। जून सन् १६०६ ई० में कुछ ग्रामीणों तथा अंग्रेज़ी अफसरों से मुठभेड़ भी हो गई थी। ऐसी दशा में ताबा का प्रश्न उत्पन्न हुआ।

तुर्की सुल्तान का कहना था, कि ताबा साइनाई प्रायद्वीप में है। इसी कारण तुर्की सरदार ने ताबा ले लिया है। ताबा अकाबा के समीप एक बन्दरगाह लाल सागर पर है। काफ़ी लड़ाई झगड़ा होने के पश्चात् एक सभा तुर्की राजदूत और मिस्र के पाशा के बीच हुई, जिसके अनुसार तुर्की सुलतान ने ताबा वापस कर दिया

और एक कमीशन के कथनानुसार तुर्की राज्य और मिस्र राज्य के बीच सीमा बना दी गई।

अप्रैल सन् १९०७ ई० में मिस्र के ऊपर एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें बतलाया गया था कि राष्ट्रीय तथा मुसलमानी आन्दोलनों से मिस्र को हानि पहुँच रही थी। इसके पश्चात् ही लार्ड क्रोमर ने ब्रिटिश मन्त्री तथा काउन्सल जनरल के पास इस्तीफा दे दिया और सर एरडन गोर्स्ट क्रोमर के स्थान पर आये।

गोर्स्ट ने क्रोमर की नीति के अनुसार ही काम आरम्भ किया। प्रान्तीय काउन्सिलों की ताक़त बढ़ाई गई। राज्य प्रबन्ध में मिस्री लोगों को अधिकार प्रदान किये गये। देनशवाई के क़ैदी छोड़ दिये गये। राष्ट्रीय पार्टी ने सुधारों को काफी नहीं समझा और अंग्रेज़ों के विरुद्ध आन्दोलन करना आरम्भ किया। फरवरी सन् १९१० ई० में जब स्वेज़ नहर की कम्पनी के समय की वृद्धि का प्रश्न उठा, तो उसका विरोध किया गया। दो दिन के पश्चात् ही प्रधान मन्त्री (जिसने स्वेज़ नहर के मामले को पेश किया था) को एक नौजवान राष्ट्र-वादी ने मार डाला। मिस्र सरकार ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध



जो प्रचार हो रहे थे उसे दबाने में अत्याचार करने लगी। किन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई।

गोर्स्ट के बाद लार्ड किचनर रेज़ीडेन्ट होकर १९११ ई० में मिस्र पहुँचा।

लार्ड किचनर ने पहुँचते ही देश में शान्ति स्थापित करना चाहा। मिस्री लोगों में जो अग्रगामी दल था उसे दबा दिया और मिस्र जो सहायता इटली के विरुद्ध टर्की को दे रहा था उसे भी बन्द कर दिया। मुसलमानी भाव बड़े तीव्र हो रहे थे, उसे भी दबाने का प्रयत्न किया गया। १९१३ ई० में एक नये विधान के अनुसार एक कानून बनाने वाली सभा बनाई गई। इसमें ६६ चुने हुये मेम्बर और १७ गवर्नमेन्ट के नामज़द मेम्बर रक्खे गये। प्रेसीडेएट (सभापति) तथा वाइस प्रेसीडेएट (उप-सभापति) इस सभा के गवर्नमेन्ट की ओर से बनाये जाते थे। इस सभा को यह अधिकार प्रदान किया गया था कि वह जिस काम को देश के विरुद्ध समझे उसका विरोध कर सकती है और अपने देश की स्थिति सुधारने के लिये नए कानून बना सकती है। वक्फ (दान) विभाग में भी सुधार किया गया। सय्यद जगलूल पाशा

को उप-सभापति बनाया। यह राष्ट्रीय पार्टी का नेता था। दाई लोग इस विधान के विरुद्ध थे, इसलिये उन्होंने विरोध किया और मोहमद सईद के स्थान पर हुसेन रशीद पाशा की नियुक्त की गई। तो भी खेदाई लोगों का आन्दोलन चलता रहा। १९१४ ई० में लार्ड किचनर ने परेशान हो कर छुट्टी ले ली।

बड़ी लड़ाई के आरम्भ हाने पर लार्ड किचनर युद्ध मंत्री बनाये गये और खेदाई अब्बासहलमी कुस्तुनतुनिया चला गया। वहां अब्बास हिलमी अँग्रेज़ों के विरुद्ध दुश्मन की ओर जा मिला। मिस्र का बिधान तोड़ दिया गया और अंग्रेज़ सरकार ने मिस्र तथा टर्की की प्रोटेक्टोरेट अपने हाथों में ले ली। हुसेन कामिल को इंगलैण्ड की घोषणा के अनुसार मिस्र का सुल्तान बनाया गया। मिस्र टर्की की आधीनता से भी अलग कर दिया गया। अँग्रेज़ अफसर युद्ध के समय दूसरे स्थानों पर काम करने के लिये बुला लिये गये थे। इसलिये नवयुवकों का आन्दोलन शक्तिशाली होने लगा। विद्यार्थी लोगों ने भी आन्दोलन उठाया और अपने लिये उच्च स्थानों की मांग पेश की।



१६१६ के अन्त में फुआद बादशाह बनाया गया। युद्ध के अन्त में अमरीका के प्रेसीडेण्ट की घोषणा के अनुसार मिस्र देश को स्वतंत्रता प्रदान करने की अनुमति इंगलैण्ड ने दी। ज़गलूल राष्ट्रीय पार्टी का नेता बना कर इंगलैंड भेजा गया और उसने मिस्र की स्वतंत्रता की मांग पेश की। किन्तु उसकी मांग अंग्रेज़ सरकार ने ठुकरा दी। इस पर मंत्रियों ने स्तीफा दे दिया। जब शान्ति सभा में मिस्र का बुलावा हुआ तो प्रधान मन्त्री ने भी स्तीफा दे दिया। इस समय राष्ट्रीय आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ लिया था कि अंग्रेज सरकार को मारशल-ला की घोषणा करनी पड़ी और ८ मार्च सन् १६१६ को जगलूल उसके तीन प्रधान मित्रों के साथ गिरफ्तार कर लिये गये। यह लोग माल्टा द्वीप को भेज दिये।

मार्च सन् १६१६ से मिस्र में गदर हो गया। केरो टांटा और डेल्टा प्रान्तों में गदर ने बड़ा जोर पकड़ा। अँग्रेज् अफसरों की हत्याएं की गईं और सारे देश में अशान्ति फैल गई। सभी श्रेणी के लोग गदर में शामिल हो गये। अन्त में अप्रैल सन् १६१६ में जगलूल और उसके साथी छोड़ दिये गये। यह लोग पेरिस इस

आशा से गये कि उन्हें शान्ति सभा (पीस कान्फ्रेंस) में स्थान मिलेगा। किन्तु उनकी यह आशा पूरी न हुई।

अँग्रेज़ी सरकार ने लार्ड मिलनर को मिस्र भेजा कि वह मामले की जांच करके अपना वक्तव्य प्रकाशित करे। मिलनर मिशन का विरोध सारे मिस्र देश में किया गया। मिलनर कमेटी के सदस्यों को मार डालने का प्रयत्न किया गया। देश की स्थिति बड़ी शोचनीय हो गई थी। तीन बार मिस्री मंत्री को बम्ब से मारने का प्रयत्न किया गया। १६२० ई० में मिलनर कमेटी की रिपोर्ट इंगलैंड की सरकार के सामने पेश की गई। जगलूल और उसके साथ दूसरे साथी लन्दन बुलाये गये और जगलूल-मिलनर संधि हुई।

इसके पश्चात् अदली पाशा ने सरकार की बागडोर अपने हाथ में ली। जगलूल ने उसका विरोध किया। केरो, सिकन्दरिया और दूसरे नगरों में बलवा हो गया। जगलूल पार्टी के १६ सदस्यों को फांसी दी गई और बहुत से लोगों को सजाएँ हुईं।

मिलनर रिपोर्ट के ६ महीने बाद अगली जुलाई सन् १६२१ ई० में अपने पार्टी के कुछ सदस्यों के साथ

लन्दन गया और प्रोटेक्टोरेट को तोड़ने पर ज़ोर दिया। ऐडली और अँग्रेज़ सरकार के बीच सुलह न हो सकी। अदली ने आखिरकार स्तीफा दे दिया। अदली का स्थान लेने के लिये कोई भी व्यक्ति तयार न हुआ। लोअर मिस्र की ओर जगलूली आन्दोलन चल रहा था, जगलूल और उसके ५ साथियों को अँग्रेज़ सरकार ने देश से निकालने की सज़ा दी।

केरो आदि में जो बलवे हुये उनको अँग्रेजों ने अपनी सख्ती से दबा दिया। किन्तु हमेशा की शान्ति स्थापित होना कठिन था। इसलिये १६२१ ई० में लार्ड अलेनबी ने सोचा था, कि वह इस्तीफा दे देगा और वापिस न आवेगा। किन्तु एक महीने के बाद ही उसे आना पड़ा।

२८ फरवरी सन् १६२१ ई० को लार्ड अलेनबी ने मिस्र की स्वतंत्रता की घोषणा की।

१६ अप्रैल सन् १६२३ ई० को मिस्र का नया बिधान जारी किया गया। जगलूल और उसके साथियों को वापस आने की आज्ञा दे दी गई। १६२७ में मिस्री सरकार और अंग्रेजी सरकार के बीच एक संधि हुई,

जिसके अनुसार अंग्रेज़ी सरकार ने युद्ध के समय मिस्र की सहायता करने का बचन दिया। मिस्र इस संधि के अनुसार विदेशों से मैत्री तथा दुश्मनी न रक्खेगा और किसी भी देश से जो अंग्रेज़ों के बिरुद्ध होगा मित्रता नहीं कर सकेगा। मिस्र की सेना अँग्रेज़ी ढंग पर तयार की जावेगी और उसके संगठन करने में अँग्रेजी साम्राज्य के ही लोग रक्खे जावेंगे।



धर्म तथा जातियां

मिस्र के निवासी मामूली तौर पर दो भागों में विभाजित किये जा सकते हैं। एक तो वे लोग हैं जो नगरों में रहते हैं और दूसरे देहात के गावों के निवासो हैं।

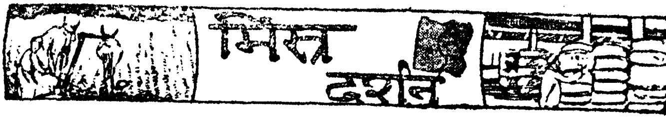
मिस्र में घूमने फिरने वाली जाति के अरबी लोग भी रहते हैं। यह लोग बद्दू कहलाते हैं। अरबी भाषा का प्रयोग करने वाली हेडेनडोवा, एशारिन और अबहदा आदि जातियां हैं, जो कोस्सीर से सुवाकिन के मध्यवर्ती मरु प्रदेश में रहती हैं। नूबानुबियन या बेर-बेरिन जाति के लोग अस्वान और डोंगोला के बीच नील की घाटी में रहते हैं। इन लोगों का प्रधान काम खेती करना है। यह लोग हब्शी और अरब जाति से मिल कर बने हैं। बिदेशी लोगों की संख्या लगभग २ लाख है। यह लोग अधिकतर सिकन्दरिया में रहते हैं। इनमें यूनानी, इटेलियन, अँग्रेज़, फ्रान्सीसी, सीरियन आदि जातियाँ शामिल हैं। तुर्की लोग भी रहते हैं।

मिस्र के अधिकांश निवासी मुसलमान हैं। इनकी

संख्या लगभग २ करोड़ है। ईसाइयों की संख्या लगभग २० लाख है। इसमें सभी मत वाले ईसाई सम्मिलित हैं। यहूदियों की संख्या भी लगभग ७५ हज़ार हैं। मुसलमानों में सुन्नी, शफ़ी, हनीफ़ और मलीकी आदि फ़िर्के हैं। उलमा (शिक्षित) लोगों के बीच शेखुल-इस्लाम का चुनाव हुआ करता है। शेखुल-इस्लाम प्रधान धार्मिक नेता माना जाता है। कुछ बातों में वह प्रधान न्यायाधीश भी माना जाता है।

मुसलमानों के पास बहुमूल्य जायदादें हैं, जा वक़्फ़ (दान) विभाग के निरीक्षण में हैं। इन जायदादों से ३७,५०,००० रु० सालाना की आमदनी है जो धर्म-कार्य में व्यय की जाती है।

सिकन्दरिया का पैट्रियार्क कोप्ट-संस्था पर शासन करता है। इथिओपिया तक का प्रदेश उसके आधीन है और उस की सहायता के लिये ३ मेट्रोपोलिटन और १२ विशप हैं।



रीति-रिवाज और रहन-सहन

मिस्री लोग मामूली क़द के होते हैं। स्त्री-पुरुष दोनों ही सुडौल और मज़बूत होते हैं। केरो तथा निचले मिस्र के रहने वालों का रँग साफ और कुछ पीला होता है। ऊपरी मिस्र के लोगों का रँग गेहुआँ होता है। मिस्री लोगों का चेहरा गोल, मत्था चौड़ा, नाक सीधी और आँखें गहरी काली और चमकीली होती हैं। लोग डाढ़ी और मूँछ रखते हैं। मिस्री लोग सर में थोड़ा सा बाल रखते हैं, जिसे 'शुशेह' कहते हैं। स्त्रियां १४ से बीस वर्ष तक बहुत सुन्दर मालूम होती हैं। पर जैसे ही २० साल की अवस्था पार हो जाती है उनकी सुन्दरता घटने लगती है। मिस्र देश में स्त्री और पुरुष दोनों ही शरीर में गुदना गुदाते हैं।

नगरों के लोगों का पहनावा योरुपीय सभ्यता के अनुसार बदल गया है। स्त्रियां भी अब योरुपीय ढँग से रहने लगी हैं। उच्च तथा मध्यम श्रेणी के लोग जो अभी तक प्राचीन ढँग पर रहते हैं। वे जांघिया और चौड़ी बांह का कुर्ता पहनते हैं। कुर्ते के ऊपर बंडी पहनी जाती है। बंडी के ऊपर एक दूसरा रेशमी या सूती

कपड़ा पहनते हैं जो घुटनों तक लटकता रहता है। यह लोग काशमीरे, रेशम और किसी दूसरे ऊनी शाल से पेटी कसते हैं। सब के ऊपर यह लोग एक लम्बा कुर्ता पहनते हैं, जिसके सामने का भाग खुला रहता है। सिर पर तुर्की टोपी या और कोई दूसरी लाल टोपी रहती है। इसके ऊपर साफा बाँधा जाता है।

बहुत से लोगों का पेशा साफे के रंग से पहचाना जाता है। नौकर लोग अपने जूते के रंग से पहचाने जा सकते हैं। गरीब लोग नंगे पाँव रहते हैं।

स्त्रियाँ भी योरुपीय ढंग पर रहने लगी हैं। जो प्राचीन ढंग पर रहती हैं वे रेशमी या सूती पायजामा पहनती हैं। उनके मोज़े चमकीले, लाल तथा और दूसरे रंग के होते हैं। वे कमीज़, वेस्ट कोट और उसके ऊपर एक लम्बा वेस्ट कोट पहनती हैं, जो लम्बा होता है। यह सामने और बगल में खुला रहता है और आमतौर पर काशमीरे का बना होता है। वेस्ट के ऊपर स्त्रियाँ जाकेट पहनती हैं, जो सुनहरे बेलबूटों से सजा होता है। निम्न श्रेणी की स्त्रियाँ छपे कपड़े या छींट के पायजामे और कसा हुआ वेस्ट कोट पहनती हैं। बुर्क़ा

सभी श्रेणी में प्रयोग किया जाता है। स्त्रियाँ सिलीपर तथा जूतियां पहनती हैं। गरीब स्त्रियाँ मर्दों की भाँति लाल जूते पहना करती हैं। ऊपरी मिस्र की स्त्रियाँ नथुनी नहीं पहनतीं।

मिस्री लोग तीन बार भोजन करते हैं। सवेरे सूर्य निकलने के एक घंटे बाद, फिर दोपहर और शाम को खाते हैं। पूड़ी-कचौड़ी, समोसे, मिठाइयाँ और फल को लोग बड़ा सुन्दर भोजन समझते हैं। क़हवा बहुत पिया जाता है। तम्बाकू पीने का रिवाज भी मिस्र में सभी श्रेणियों में बहुत है। सवेरे से शाम तक लोग तम्बाकू पिया करने हैं। बहुत सी स्त्रियों ने भी तम्बाकू पीने की आदत डाल ली है।

मिस्री लोग अतिथि-सत्कार बहुत करते हैं। वे अजनबी लोगों से बातचीत करने के बड़े प्रेमी होते हैं। उनके ढङ्ग बड़े सभ्य तथा सराहनीय होते हैं। वे बड़े समझदार होते हैं। उनकी स्मरणशक्ति बड़ी तीव्र होती है। मिस्री लोग जानवरों पर बड़े दयालु होते हैं। यह लोग बड़े-बूढ़ों का आदर करते हैं। खाने पीने और दूसरों को खिलाने पिलाने में मिस्री लोग बड़े

उदार होते हैं। यह लोग ईमानदार और कठिन परिश्रमी होते हैं।

मिस्री लोग नहाने के बड़े शौक़ीन होते हैं। नाच-गाने का रिवाज भी मिस्र में बहुत है। स्त्रियाँ और मर्द सभी नाचते गाते हैं। कुछ लोगों का नाचना-गाना ही मुख्य पेशा है। सपेरे और बाज़ीगरों की संख्या भी मिस्र में बहुत है। केरो के कहवाघरों के सामने ये बाजीगर तमाशा दिखाते फिरते हैं।

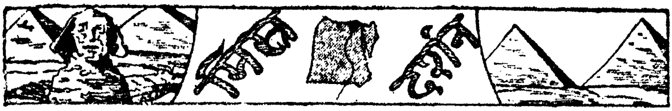
मोहर्रम के दस दिन बड़े पवित्र माने जाते हैं। यह मुसलमानी साल के प्रथम दस दिन होते हैं। दसवीं रात बड़े समारोह के साथ मनाई जाती है। इसी दिन हुसैन क़त्ल हुये थे। हुसैन हज़रत अली के पुत्र और हज़रत मोहम्मद के पौत्र थे। केरो की हुसैन की मसजिद में क़त्ल (दसवीं) की शाम को बड़ी भीड़ होती है। एक श्वेत घोड़े पर एक बालक श्वेत पोशाक में बैठा कर जुलूस में निकाला जाता है। बालक हुसैन तथा घोड़े को हुसैन का घोड़ा लोग समझते हैं। बालक और घोड़े पर खून के दाग डाल दिये जाते हैं। मसजिद से जुलूस किसी दूसरे निजी स्थान को जाता है, जहाँ पर

मुल्ला लोगों को हुसैन के क़त्ल का इतिहास बताता है। इसके बाद चालीसवाँ तथा धार्मिक यात्रियों के लौटने का त्योहार मनाया जाता है। साल के तीसरे महीने में हज़रत मोहम्मद के जन्म दिवस का त्यौहार मनाया जाता है। यह त्यौहार नौ दिन तक रहता है और यहां का सब से बड़ा त्योहार माना जाता है। केरो में नौ दिन तक मेला लगा रहता है। जन्मोत्सव एक खुले मैदान में मनाया जाता है, जिसके चारों ओर खुदाई लोगों, दरवेशों और सरकारी कर्मचारियों के तम्बू लगे रहते हैं। हज़रत हुसैन और हज़रत अयूब के जन्मों के त्योहार भी मनाये जाते हैं। सातवें महीने में हज़रत मोहम्मद के स्वर्ग जाने का त्योहार होता है। शबरात का त्योहार भी बड़े समारोह के साथ होता है। रमज़ान के महीने में लोग 'रोज़ा' (उपवास) रखते हैं। इसके बाद 'ईद' होती है। साल के आखिरी महीने के दसवें दिन अल-ईद अल कबीर (बक़राईद) मनाई जाती है। इसी दिन हज़रत इब्राहीम ने अपने पुत्र का बलिदान किया था। हज़रत इब्राहीम को तुर्क लोग बैराम भी कहते हैं।

नील नदी के बाढ़ आने पर भी लोग उत्सव मनाते

है। प्रत्येक ज़िले में नदी की बाढ़ बताने वाले लोग बाढ़ का हाल लोगों को बताते फिरते हैं। यह काम १७ जून से आरम्भ होता है और २६ या २७ सितम्बर तक रहता है।

फ़क़ीरों के मक़बरे मिस्र में बहुत हैं, प्रत्येक गाँव या नगर में ये मक़बरे पाए जाते हैं। पहाड़ियों पर भी यह यादगार बनी हुई हैं। सय्यद इमाम अश्शफ़ी, सय्यद अहमदुल बैदावी और सय्यद इब्राहीम देसूकी यहाँ के बड़े महात्मा हैं। सय्यद अहमद बैदावी और इब्राहीम देसूकी ने दरवेश मत का प्रचार किया। मिस्र में हज़रत मुहम्मद के वंशजों की बहुत सी क़ब्रें हैं जो बड़े आदर के साथ पूजी जाती हैं। ज़ीनब (हज़रत अली की पुत्री), ज़कीना (हज़रत हुसैन की पुत्री) और नफीसा (हज़रत हसन की पौत्री) की यादगारों का लोग बड़ा आदर करते हैं। हुसैन की मसजिद मिस्र देश में सब से बड़ा धार्मिक स्थान माना जाता है। कहा जाता है कि इसके अन्दर हज़रत हुसैन का सिर गड़ा है। मिस्र के अन्दर दरवेशों के बहुत से मत हैं। प्रत्येक मत का प्रधान खलीफा अबू बकर कोई न कोई वंशज है। यह प्रधान शेखुल बकरी कहलाते हैं।



सञ्आदिया लोग सांप पर जादू करने तथा जीते सांपों को भक्षण करने के लिये प्रसिद्ध हैं। इलवानिया लोग अग्नि तथा शीशे इत्यादि को खाते हैं।

मिस्र लोग जादू में बड़ा विश्वास करते हैं उनका विश्वास है, कि सब कहीं जादू मौजूद है तथा जादू ही का राज्य सब कहीं है। इसी लिये '.कुरान शरीफ़' की आयत मकानों और दुकानों के सामने खुदी रहती है जिससे बुरे जादू का प्रभाव न पड़े। जादू, तंत्र और मन्त्र की विद्या मिस्र देश में अब भी काफी प्रचलित है।

देश दर्शन

मिस्र का प्राचीन जीवन

ईसामसीह के पैदा होने के ५००० वर्ष पूर्व मिस्र देश में सभ्य लोग रहा करते थे। उस समय के लोग गणित, विज्ञान, ज्योतिष, शिल्पविद्या और संगतराशी में बड़े निपुण थे। उनकी अपनी एक अलग ही भाषा थी।

मेम्फीस और थीब्ज़ मिस्र के प्राचीन नगर हैं। यहां के खंडहर बड़े अजीब हैं। इन खंडहरों को अब देख कर मनुष्य परेशान हो जाता है और वे अब भी मनुष्य जाति के लिये देवताओं और परियों के कहानियों के भांति हैं। करनाक नगर मन्दिरों का नगर था। यहां के दरवाजे, कचहरियां, मन्दिर, कमरे, पवित्र झीलें और मेहराब बड़े सुन्दर हैं।

यहां के प्रधान महल का द्वार १५० फुट ऊँचा और ३५० फुट चौड़ा है। इन बड़े द्वार को पीलोन कहते हैं। पीलोन द्वार होकर ही भीतर प्रवेश करने का मार्ग है। भीतर की कचहरियों के महल इतने बड़े हैं कि उनके भीतर बड़े बड़े मन्दिर बने हैं। उनकी बड़ाई शब्दों द्वारा नहीं हो सकती।



मिस्र के प्राचीन राजा सुन्दर महलों में आनन्दपूर्वक रहा करते थे। उनके बड़े महल एक नगर की भांति होते थे। एक मकान में राजा और उनके नौकर रहा करते थे। दूसरे मकान में राज्य के कमरे होते थे, जिसमें सर्दार तथा अफ़सर अपनी सभाएँ करते थे। इसमें एक बड़ा कमरा होता था, जहां पर निमंत्रण के समय लोग भोजन करते थे। तीसरा महल रानी, छोटी राजकुमारी और राजकुमारियों का होता था। इस महल के चारों ओर सुन्दर वाटिकाएँ लगी रहती थीं। बड़े बड़े स्तबल होते थे जहां पर हज़ारों घोड़े बांधे जाते थे, रथ रखने के लिये भी मकान बने थे। सामान तथा अनाज रखने के लिये मकान लम्बी कतारों में बने रहते थे। इसके सिवा और भी बहुत से मकान होते थे जिनमें वज़ीर, चौकीदार, सैनिक, खिदमतगार और बाहर से आने वाले लोग रहते थे। इसके सिवा चमार, धोबी, दर्जी, बावर्ची वैद्य, हकीम आदि सभी प्रकार के लोगों के रहने के लिये स्थान बने रहते थे।

जब बादशाह घर से बाहर जाते थे तो कुर्सी आदमियों के ऊपर चौकी पर रक्खी जाती थी और उसपर बैठ

कर बादशाह निकलते थे। कभी कभी सुन्दर सजे हुए रथ पर चलते थे। चारों ओर से पंखा हांकने वाले पंखे हांका करते थे। बादशाह के रथ के पीछे रानी और राजघराने के लोगों के रथ होते थे। सभी रथों में सुन्दर तेज घोड़े जोते जाते थे।

शाही महल के अन्दर की सजावट का वर्णन करना बहुत कठिन काम है। घर के अन्दर सभी प्रकार के ज़रूरी सामान सुन्दर से सुन्दर रहते थे। सोफे, गद्देदार कुर्सियां हीरे जवाहिरात के नगों से जड़ी रहती थी, उनके कपड़े पर सोने चाँदी के बेल बूटे रहा करते थे। हवा को शुद्ध करने के लिये खुशबूदार बत्तियां जलाई जाती थीं।

मिस्र् के प्राचीन गरीब निवासी उच्च श्रेणी वालों के गुलाम हुआ करते थे। गुलामों के मालिक उन्हें जो हुक्म देते थे वही काम उन्हें करना पड़ता था। इन्हीं गुलामों से मन्दिर महल और स्मारकों के बनाने का काम लिया जाता था। खानों में पत्थर निकालने का काम भी यही लोग करते थे। नील नदी की मिट्टी में भूसा मिला कर यह लोग ईंट बनाया करते थे।

निम्न श्रेणी वाले लोग मिट्टी के बने हुए झोपड़ों

में रहा करते थे। वे लोग गेहूं और जौ अपने हाथ से चक्कियों में पीसा करते थे। स्त्रियां छोटी छोटी रोटियां वर्तमान समय की तरह बनाया करती थीं। देवताओं को भेंट देने और शाही महलों के लिये गरीब लोग सन पटसन की खेती करते थे और उससे सुन्दर कपड़े बनाते थे, जो पुरोहित, और उच्च श्रेणी वाले पहनते थे। कफन के लिये भी पटसन का बना हुआ कपड़ा ही प्रयोग किया जाता था।

तांबे और मिट्टी के बर्तन बनाए जाते थे। प्राचीन लोग हाथी, जराफ और हिप्पोपोटामस (दरियाई घोड़ा) का शिकार किया करते थे। नरकुल पेपिरस का पौदा मिस्र वालों के लिये बड़े काम का था। यह नील नदी के तटीय प्रान्त में उगा करता था। मुलायम पौदे भोजन का काम देते थे। बड़े तने झोपड़े तथा बोटों के बनाने के काम में आते थे। इसका छिलका कागज़ का काम देता था। प्राचीन समय में मिस्र देश के लोग इसी पौदे के छिलके पर लिखा करते थे।

नील नदी के आस पास ही मिस्री लोग रहा करते थे। मिस्र की आबादी बहुत घनी थी। इसी कारण जहाँ नील नदी के बाढ़ का पानी नहीं पहुँचता था, वहां

भी खेती की जाती थी और लोग चमड़े की मश्कों में पानी भर भर कर सींचा करते थे। इस प्रकार तेज़ धूप में रहकर यह लोग अनाज पैदा करते थे।

यहाँ के बादशाह अपनी प्रजा की ही सेना बनाते थे। इन्हीं गरीबों से पत्थर ढोने खोदने और महलों तथा मन्दिरों के बनाने का काम भी लिया जाता था।

मिस्री लोगों का विश्वास था कि मरने के बाद आत्मा इस दुनिया में रहती है और फिर अपने शरीर में प्रवेश कर सकती है। इसी लिये बादशाहों और बड़े बड़े अमीरों के मृतक शरीर को मसालेदार कपड़े में लपेट कर मसालों के डिब्बों में रखते थे। इन मृतक शरीरों को 'ममी' कहते हैं। यह ममी बहुत से देशों के अजायब घरों में रक्खे हैं। चार पांच हज़ार वर्ष की लाशें अब भी उसी तरह रक्खी हुई हैं।

मिस्र के प्राचीन राजा अपनी शरीरों को रखने के लिये स्थान बनवाया करते थे। पहले लोग बालू में शरीरों को गाड़ते थे। उसके बाद पहाड़ों में कब्रें बनवाने लगे और फिर बाद में पिरेमिड बनवाये गये। ये पिरेमिड तथा प्राचीन कब्रें हज़ारों की संख्या में मिस्र देश

में पाई जाती हैं किन्तु चियोप बादशाह के बनवाये हुए तीन पिरेमिड सब से अधिक प्रसिद्ध हैं। ये केरो के समीप नील के दूसरी ओर हैं। चियोप ईसामसीह से ५००० साल पहले मिस्र में राज्य करता था। सबसे बड़े पिरेमिड की ऊंचाई ४८० फुट है और इसकी चारों भुजाओं में से प्रत्येक ७०० फुट से भी अधिक लम्बी हैं।

बड़े पिरेमिड के चारों कोण ठीक उत्तर, दक्षिण-पूर्व और पश्चिम की ओर है। इन कोणों की छाया द्वारा पुरोहित लोग दिन का समय और मौसिम बदलने का समय बताया करते थे।

बड़े पिरेमिड के समीप ही स्फिन्क्स का स्मारक है। यह स्मारक भी मिस्र का बहुत प्रसिद्ध स्मारक है। इसका सिर आदमी का और धड़ शेर का बना हुआ है। इसके शरीर की लम्बाई १८० फुट से भी अधिक है। यह स्मारक हजारों वर्ष से वैसा ही खड़ा है। यदि यह बोल सकता तो पता नहीं कैसे अद्भुत वर्णन सुनाता।

मिस्र के राजाओं के राज्य के समय के हालात उनके कब्रों, महलों की दीवारों और पत्थरों पर खुदे हुये हैं। इन पर चित्र बने हुये हैं। प्राचीन मिस्री भाषा

चित्रों की थी। उसका पढ़ना बहुत कठिन था, किन्तु नील नदी के मुहाने के समीप रोसीटा स्थान पर एक लेख प्राप्त हुआ। इस लेख में मिस्री भाषा के नीचे उसी का अनुवाद यूनानी भाषा में भी लिखा था। उसी की कुंजी बना कर लोगों ने और दूसरे लेखों को पढ़ना आरम्भ किया है। इस प्रकार अब प्राचीन मिस्री जीवन का हाल मालूम होने लगा है।

राजों की कब्रों में केवल उनकी लाशें ही नहीं वरन् राजाओं के प्रयोग करने की बहुत सी वस्तुएं भी प्राप्त हुई हैं। पेपीरस की छाल में लिखा हुआ एक १३० फुट लम्बा लेख प्राप्त हुआ है। यह लेख रेमसेस राजा के समय का है।

मिस्र् देश की सारी प्राचीन वस्तुएँ भूमि के भीतर गड़ी हैं। जैसे जैसे खुदाई होती है, हमको अधिक से अधिक बातें मालूम होती जाती हैं। यह देखकर बड़ा आश्चर्य प्रतीत होता है कि हज़ारों साल पहले के मिस्री लोग कितने सभ्य थे और उन्होंने कितने अद्भुत कार्य किये थे! क्या इस समय की सभ्यता उनकी बराबरी कर सकती है?



मिस्र देश की भाषा

भाषा का प्रयोग मिस्र देश में ईसा के लगभग १३०० वर्ष पूर्व से था। प्राचीन भाषा अजीब है जो पत्थरों पर खुदी है।

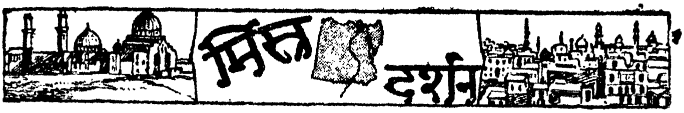
प्राचीन मिस्री भाषा—पाँचवें और छठें वंश के समय के पिरेमिडों में पहले वंश के समय की भाषा खुदी है। यह भाषा बहुत संक्षेप में है। पाँचवीं और छठीं पीढ़ी के कुछ खुदे हुए लेख भी मौजूद हैं। चौथी, पाँचवीं और छठीं पीढी का इतिहास, भाषा आदि के लेख भी पिरेमिडों में पाए गए हैं। प्राचीन भाषा देहाती है और उसके संकेत यूनानी भाषा के शब्दों की तरह हैं।

मिस्री भाषा सेमेटिक भाषा से मिलती है। मिस्री भाषा में लिंगों की पहिचान है। और संज्ञा में त जोड़ने से विशेषण में ई, और औज़ारों आदि के नामों में म जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है। वह के लिये 'स्डम्' और सुनने के लिये फ शब्द का प्रयोग होता है। स्डम न-फ = उसने सुना है।

मिस्री भाषा में दो वर्तमान काल, तीन भविष्यत् काल होते हैं। प्राचीन मिस्री भाषा केवल संकेतों और तस्वीरों में है। तेज़ दौड़ने के लिये तेज़ दौड़ते हुये घोड़े के चित्र का प्रयोग किया जाता था। सुन्दरता बताने के लिये किसी सुन्दर वस्तु का चित्र बना दिया जाता था।

जब लोगों ने प्राचीन मिस्री भाषा को पिरेमिडों में खुदा पाया तो पढ़ने का प्रयत्न किया गया और और उन्हों ने एक तसवीरों तथा संकेतों का कोष बनाया जिससे अब प्राचीन मिस्री भाषा पढ़ी जा सकी है।

आधुनिक मिस्री भाषा अरबी भाषा से बिलकुल मिलती जुलती है।



आने जाने के साधन

मिस्र देश अपनी प्राकृतिक स्थिति के कारण दुनिया के एक प्रसिद्ध व्यवसायी मार्ग पर अधिकार किये हुये है। स्वेज़ नहर रूम सागर और लाल सागर को मिलाती है। यह योरुप तथा एशिया का प्रसिद्ध व्यापारिक मार्ग बनाती है। स्वेज़ नहर के खुलने से मिस्र के राजनैतिक तथा आर्थिक स्थिति पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। पोर्ट सईद बन्दरगाह पर दुनिया के सभी देशों के जहाज़ आते हैं। सिकन्दरिया बन्दरगाह से भी दूसरे योरुपीय बन्दरगाहों से जहाज़ आते जाते हैं। स्वेज़ से पोर्ट सूडान (बन्दरगाह) को जहाज़ बराबर आते जाते रहते हैं।

मिस्र में दो प्रकार की रेलें हैं। एक तो मिस्री सरकार की रेलवे लाइनें और दूसरी प्राइवेट रेलवे लाइनें हैं। ट्रंक लाइन सिकन्दरिया से दमानहर और तांता हो कर जाती है। दूसरी पोर्ट सईद से इस्माईलिया होकर आती है जो पहली लाइन से केरो में मिलती है। केरो से रेलवे लाइन दक्षिण की ओर नील की घाटी को आती है। पहले यह रेलवे लाइन नील नदी के पश्चिमी किनारे से होकर आती है उसके बाद नोग हमादी पर पुल

द्वारा नदी को पार करके नदी के पूर्वी तट पर नदी के साथ साथ चलती है। और शल्लाल तक जाती है। शल्लाल से वादी हल्फा तक स्टीमर सर्विस है। वादी हल्फा से खरतूम और लाल सागर को रेलवे जाती है। ब्रांच लाइनें केरो, सिकन्दरिया और डेल्टा के दूसरे नगरों को स्वेज़ नहर से मिलाती हैं। एक ब्राँच लाइन वास्टा से अबूस्का को जाती है। दूसरी नैरोगेज लाइन खारगा जंकशन से खारगा ओसिस को जाती है। सिकन्दरिया से एक रेलवे लाइन पश्चिम की ओर समुद्री तट होकर जाती है। नील नदी में स्टीमर तथा जहाज चलते हैं। मिस्र देश में लगभग ३,००० मील रेलवेलाइन है।

सड़कें भी मिस्र देश में हैं, जिन पर मोटरकार, लारियाँ और ऊँट गाड़ियां चलती हैं। रेगिस्तानों में ऊँट सवारी तथा सामान ले आने, ले जाने का काम करता है। इम्पीरियल एअरवेज़ (हवाई कम्पनी) की साप्ताहिक सर्विस मिस्र में चलती है। इस कम्पनी के वायुयान केरो, बसरा, गाज़ा और बग़दाद के बीच चला करते हैं।

मिस्र में डाक के लिये भी बहुत अच्छा प्रबन्ध है। सभी प्रधान नगर तार द्वारा मिले हुये हैं। मिस्र देश दुनिया के दूसरे देशों से केबुल (समुद्री तार) द्वारा मिला हुआ है।



व्यापार

अँग्रेज़ों के आने के बाद से मिस्र देश का व्यापार बहुत बढ़ गया है। खेती से पैदा की हुई लगभग सभी वस्तुएँ बाहर जाती हैं और कारखाने की बनी हुई वस्तुएँ बाहर से अन्दर आती हैं। रुई, बिनौला, चीनी, सिगरेट, अंडे, प्याज़, चावल, गोंद आदि वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। कपड़ा, कोयला, लोहा, फ़ौलाद, लकड़ी, तम्बाकू, कलें, आटा, पेट्रोल, फल, क़हवा और शराब आदि वस्तुएँ बाहर से आती हैं। मिस्र में गोंद नहीं होती। यह सूडान से लाई जाती है और बाहर को बना कर रवाना की जाती है। तम्बाकू टर्की, सीरिया और यूनान से आती है फिर उससे सिगरेट बनाकर बाहर रवाना किये जाते हैं। लगभग ४५ लाख रुपये के सिगरेट बाहर भेजे जाते हैं।

मिस्र देश की कपास बड़ी अच्छी होती है। इसलिये कपास की मांग योरुप के देशों में बहुत है। १९२० ई० में मिस्र से ८०,००,००० पौं० (१२,००,००,००० रु०) की रुई बाहर भेजी गई थी।

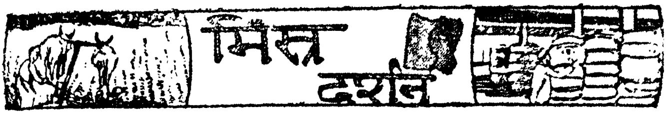
देश दर्शन

नीचे मिस्र देश के व्यापार का वार्षिक विवरण दिया है:—

साल	बाहर जानेवाले सामान का मू०	भीतर आनेवाले सामान का मू०
१९१९	२,१४,००,००,००० रु०	७२००,००,००० रु०
१९२०	१२९,००,००,००० ,,	१,५१,५०,००,००० ,,
१९२१	५५,५०,००,००० ,,	८४,००,००,००० ,,
१९२२	७३,५०,००,००० ,,	६६,००,००,००० ,,
१९२३	८८ ५०,००,००० ,,	६९,००,००,००० ,,
१९२४	९९ ००,००,००० ,,	७६,५०,०० ००० ,,
१९२५	९०,००,००,००० ,,	८७,००,००,००० ,,
१९२६	६३,००,००,००० ,,	७९,५०,००,००० ,,

पहले सिकन्दरिया के बन्दरगाह से विदेशी व्यापार वाले ९० फी सदी से अधिक जहाज़ जाते थे। किन्तु स्वेज़ नहर के हो जाने से जहाजों का आना कम हो गया है सिकन्दरिया में ४००० जहाज़ सालाना आते जाते हैं। १९२५ ई० में कुल ५० लाख टन (१४००,००,००० करोड़ मन) सामान बन्दरगाह में उतारा गया था। अँग्रेजी, इटेलियन, यूनानी तथा जर्मन जहाज़ मिस्र के व्यापार में लगे रहते हैं।

—:०:—



मिस्र देश के नगर

लगभग २००० वर्ष के पश्चात् आज हम मिस्र को फिर एक स्वतंत्र राष्ट्र देख रहे हैं। केरो नगर मिस्र की राजधानी और अफ्रीका का सबसे बड़ा नगर है। यह नगर नील नदी पर बसा है। यह नगर डेल्टा के सिरे पर है। नगर की गलियाँ बड़ी तंग हैं। लोग गधों पर बैठकर नगर का भ्रमण करते हैं। भिश्ती लोग चमड़े की मश्कों में पानी बेचते फिरते रहते हैं।

केरो नगर के बाज़ारों में बड़ी भीड़ लगी रहती है। दूकानों में जगह बहुत कम रहती है। दूकानदार अपने स्थान पर बैठा हुआ बिक्री के सामान तक आसानी से पहुँच सकता है। वस्तुओं के बनाने के कारखाने भी कैरो की गलियों में हैं। भिन्न भिन्न गलियों में भिन्न भिन्न प्रकार की चीज़ें बनाई जाती हैं। चमड़े के कारखाने वाली गली में सभी प्रकार की चमड़े की वस्तुयें बनाई जाती हैं। इसी प्रकार पीतल के बर्तन, लकड़ी के सामान और सोने चांदी के सामान बनाने वाले बाज़ार हैं। यहाँ के दूकानदार बड़े नम्र होते हैं,

वे लोग पहले चीज़ों का मूल्य अधिक कहते हैं और फिर धीरे धीरे ठीक मूल्य पर आ जाते हैं। यह लोग अपने ग्राहकों को काफी मिलाते हैं।

केरो (काहिरा) एक मुसलमानी नगर है। यहाँ बहुत सी मस्जिदें हैं। प्रत्येक मस्जिद में मीनार पर खड़ा होकर अज़ान देने वाला नमाज़ के समय अज़ान देता है। मस्जिद के भीतर जूता पहिन कर जाना मना है।

केरो के आधुनिक भाग में वाटिकायें, पार्क और होटल हैं। बड़ी सड़कों पर मोटर और ट्रैमगाड़ियाँ चलती हैं। ये सभी बिल्कुल आधुनिक ढंग पर हैं। होटलों के सामने बाजीगर, सँपेरे और नट लोग तमाशे दिखाते फिरते हैं। केरो नगर के चारों ओर भूरे रंग का रेगिस्तान है।

सिकन्दरिया मिस्र का दूसरा बड़ा नगर है। यह एक बड़ा बन्दरगाह है। यहाँ पर दुनिया के प्रत्येक देश से जहाज़ आते हैं। यहाँ की जनसंख्या ५ लाख है। यह बहुत प्राचीन नगर है इसको सिकन्दर महान् ने बसाया था। किसी समय में यह नगर दुनिया की सभ्यता तथा विद्या का केन्द्र था। सिकन्दरिया नगर का व्यापार बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ से रुई बाहर को भेजी जाती



है। यह नगर केरो से अधिक आधुनिक प्रतीत होता है।

पोर्ट सईद का बन्दरगाह डेल्टा के पूर्वी किनारे पर है। यह स्वेज़ नहर का उत्तरी प्रवेश द्वार है। मिस्र का यह दूसरे दर्जे का बन्दरगाह है। सिकन्दरिया और पोर्ट सईद के बीच में रोज़ेटा और डेमीटा के नगर नील नदी की शाखा पर बसे हैं। स्वेज़ नगर स्वेज़ नहर के दक्षिणी द्वार पर है। कोसीर का बन्दरगाह लालसागर पर है। इस बन्दरगाह द्वारा अरब और ऊपरी मिस्र का व्यापार होता है। मरेसा मातरूथ त्रिपोली की सीमा पर बसा है। एल-अरीश नगर में कारवाँ रुका करते हैं। यहाँ पर कारवाँ के ठहरने का प्रबन्ध रहता है। टाँटा, दामनहूर, मन्सूरा, ज़गज़िग और बेलबीस नगर डेल्टा के भीतरी भाग में स्थित हैं। इस्माइलिया नगर स्वेज़ नगर के मध्यवर्ती भाग में है। ये सभी नगर रुई के व्यापार के लिये प्रसिद्ध हैं।

मेचलुत-कुब्रा का नगर लोअर मिस्र में है। यह नगर रेशम और रुई के लिये प्रसिद्ध है। सलीहियो नगर रेगिस्तान की सीमा पर मन्ज़ाला झील पर स्थित है।

यहां से सीरिया जाने वाले कारवाँ का आरम्भ होता है। मतारिया नगर भी मन्ज़ाला झील पर स्थित है और मछली मारने का केन्द्र है। दमीशिया ब्रांच पर ज़िफ़्ता और समनूद नगर स्थित हैं। समनूद नगर मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये प्रसिद्ध है। रोज़ेटा ब्रांच पर फुवा नगर है। शिबनुलकोम रुई का केन्द्र है। मेनूफ नगर में गल्ले की बड़ी बड़ी मंडियाँ हैं।

मदीनतुल् फयूम नगर ओसिस (फयम) की राजधानी है। यहां की जनसंख्या ४०,००० है। बनी सुएफ, मीनिया, अस्सीयुत (एस्यूट), अखमीम, सुहाग, गिरगा, केना, लक्सर, एस्ना, एडफू, अस्वान और कोरोस्को नगर नील नदी पर स्थित हैं। बनी सुएफ केरो से ७७ मील है। यह ऊनी कपड़ा तयार करने का केन्द्र है। मीनिया नगर में योरुपियन लोग रहते हैं। यहाँ पर चीनी तयार करने का एक बड़ा कारखाना तथा कई एक सूती कपड़ा तयार करने की मिलें हैं। अस्सीयुत (एस्यूट) केरो से २३५ मील दक्षिण की ओर है। यह ऊपरी मिस्र का सब से बड़ा व्यापारिक नगर है। सुहाग नगर अस्सीयुत (एस्यूट) से ५६ मील दक्षिण की ओर स्थित है। यहां पर दो प्राचीन

कोप्टिक मठ हैं। अखलीम नगर में रेशमी तथा सूती कारखाने हैं। गिरगा नगर में मिट्टी के बर्तन सारे मिस्र देश में प्रयोग किये जाते हैं। लक्सर, केरो से ४१८ मील है, और एक प्राचीन नगर है। एस्ना नगर में भी मिट्टी के बर्तन बहुत बड़ी संख्या में बनाये जाते हैं। एडफू नगर प्राचीन मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध हैं। अस्वान नगर प्रथम प्रपात पर है। इससे ३ मील दक्षिण शल्लाल नगर है। यहाँ पर मिस्र की रेलवे का अन्त होता है। कोरसोको नगर नील नदी के किनारे अस्वान से ११८ मील दूर है। सूडान से नूबिया-रेगिस्तान होकर यहाँ कारवाँ मार्ग आता था।

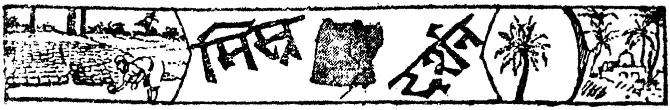
देश दर्शन

नील नदी

नील नदी विक्टोरिया झील से निकलती है। विक्टोरिया झील अफ्रीका के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। यह झील बहुत बड़ी है। इस बड़ी झील में बहुत से द्वीप, बाग तथा पुष्प वाटिकाएं हैं। किन्तु वहां पर लोग निवास नहीं करते क्योंकि वहां पर भयानक मक्खियाँ तथा कीड़े मकोड़े रहते हैं, जिनके काटने से मनुष्य बीमार होकर मर जाता है। इनमें टिसी मक्खी सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

विक्टोरिया झील से निकलने के पश्चात् नील नदी अलबर्त झील में प्रवेश करती है। मार्ग में नदी के अन्दर बड़े बड़े प्रपात हैं, जिसके कारण नदी मार्ग द्वारा उस भाग में यात्रा नहीं की जा सकती और स्थलमार्ग से यात्रा करनी पड़ती है।

अलबर्त झील से निकलने के बाद नील नदी पहाड़ों के अन्दर प्रवेश करती है। गहरी ऊँची तथा संकरी पर्वतीय कंदराओं के बीच नील नदी में जहाज या नाव नहीं चलते। उस भाग में नदी बड़े वेग के साथ



बहती है। नील का यह भाग बड़ा भयानक तथा खतरनाक है।

पहाड़ी कंदराओं को पार करने के पश्चात् गोन्डोकेरो नगर मिलता है। यह नगर नील नदी पर स्थित है और यहाँ से सचमुच नील नदी की यात्रा आरम्भ होती है। यहां से खारतूम तक (लगभग एक हज़ार मील तक) नील के किनारे किनारे लम्बे घास के मैदान हैं। इन मैदानों में पशु चराए जाते हैं।

खारतूम स्थान पर श्वेत नील से नीली नील नदी आकर मिलती है। श्वेत नील अपने साथ कीचड़ तथा मिट्टी बहाकर लाती है। नीली नील अपने साथ बहुत पानी लाती है। दोनों नदियों का पानी बरसात में उमड़ पड़ता है, जिससे नील की घाटियाँ भर जाती हैं और काली मिट्टी की एक तह घाटियों में जम जाती है। यह मिट्टी बड़ी उपजाऊ होती है। इसी मिट्टी के कारण डेल्टा का प्रदेश बना है।

खारतूम के नीचे चलने पर नील नदी फिर पहाड़ी प्रदेश में होकर अपना मार्ग बनाती है। इस भाग में जहाज आदि नदी में नहीं चल सकते। पहाड़ी शिलाओं

तथा कंदराओं के बीच नदी हहराती, भयानक शब्द करती चलती है। नील नदी के इस भाग में खजूर तथा कपास की उपज अच्छी होती है। खारतूम के समीप ही नील नदी का प्रथम बड़ा प्रपात है। इस बड़े प्रपात के सिवा और दूसरे छोटे छोटे प्रपात भी हैं। इस भाग में यात्रा रेल द्वारा की जाती है। अस्वान नगर नील नदी पर बसा है। यहीं से लीबियन मरु प्रदेश वाले कारवाँ चला करते थे। यहीं से लाल पत्थर निकाला जाता था, जिसकी सुन्दर मूर्तियाँ बनाई जाती थीं।

वर्तमान समय में अस्वान नगर में लोग हवा खाने तथा अपना स्वास्थ सुधारने के लिये जाते हैं। यहाँ बड़े बड़े होटल बने हुए हैं। यहाँ पर नील नदी के आरपार एक बड़ा बांध नदी का पानी रोकने के लिये बनाया गया है। यह बांध १$\frac{1}{2}$ मील लम्बा है। और पक्का सीमेन्ट का बना हुआ है। इसमें १८० फाटक हैं। नील नदी में बाढ़ जूलाई से सितम्बर महीने के बीच में आती है। जब बाढ़ आती है तो बाँध के फाटक खोल दिये जाते हैं और पानी बाँध की दूसरी ओर एक झील की भाँति जमा हो जाता है बाद को यह फाटक बन्द

कर दिये जाते हैं। यही पानी नहरों द्वारा सिंचाई के काम आता है। बांध बनने से मिस्री लोगों को बड़ी सहायता मिली है। एक तो वे बाढ़ के उपद्रव से बच जाते हैं दूसरे वही बाढ़ का पानी उन्हें जीविका प्रदान करता है। मिस्र में वर्षा बहुत कम होती है। नील के पानी से ही खेती की जाती है।

वादी हाल्फा मिस्र की सीमा पर स्थित है। यहां से उत्तर की ओर के लोगों का रहन सहन और पहनाव दक्षिण के लोगों से अलग है। उत्तर के लोग दक्षिण वालों से अधिक सभ्य हैं।

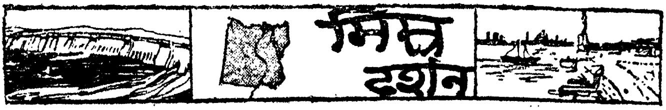
डेल्टा का प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। इस प्रान्त में रुई बहुत पैदा की जाती है। यहां संसार में सब जगहों से अच्छी रुई पैदा होती है। रुई की खेती के कारण इस भाग में गाँव बहुत घने बसे हुये हैं। सितम्बर तथा अक्टूबर महीने में रुई की खेती तयार हो जाती है। रुई चुनने के लिये बच्चे, जवान, बूढ़े सभी खेतों में जाते हैं। यह लोग अपने सामने की ओर झोलियाँ अपने कपड़ों की बना लेते हैं और उसी में कपास चुन चुन कर रखते जाते हैं।

यहाँ के गाँव खजूर और नारियल के पेड़ों में छिपे

हुये दिखाई पड़ते हैं। यहां पर प्राचीन खंडहर भी बहुत हैं। इस भाग में नदी में जहाज़ बहुत चलते हैं। अधिकांश बोट भूरे रंग के होते हैं। नदी के किनारे किनारे ऊँटों तथा गदहों के झुंड सामान लादे हुये आते जाते दिखाई पड़ते हैं।

नील नदी के डेल्टा के सिरे पर केरो नगर बसा है। यह मिस्र की राजधानी है। इस नगर की गलियां संकरी तथा बड़ी घुमावदार है। यहां की गलियों की समानता कुछ कुछ काशी की गलियों से की जा सकती है। यहां की दुकानों में बहुत कम स्थान रहता है। दूकानदार अपने पैर एक दूसरे पर फैलाये हुये बैठा रहता है। कम्बल, शाल, पीतल, तांबा और मिट्टी के बर्तन यहां की दुकानों में अधिक दिखाई पड़ते हैं। नगर के आधुनिक भाग में दुकानें आधुनिक ढंग की हैं इस भाग में विशाल भवन और होटल भी हैं।

केरो से गाड़ी द्वारा यात्रा करके लोग सिकन्दरिया जाते हैं। यह एक बड़ा बन्दरगाह है। यहाँ से मिस्र देश की रुई और दूसरा सामान बाहर भेजा जाता है। इस नगर में यूनानी, इटैलियन, अमरीकन, यहूदी,



तुर्क, फ्रान्सीसी और अँग्रेज सभी जातियों के सौदागर दिखाई पड़ते हैं। यहाँ पर अधिकाँश रोज़गारी लोग ही रहते हैं।

टांटा नगर डेल्टा के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। यहां पर कुछ पवित्र आत्माओं की स्मृतियां बनी हुई हैं। मिश्र का मरुप्रदेश नील नदी के दोनों ओर स्थित है। इसका पूर्वी भाग चट्टानी (पथरीला) है, इसी भाग में प्राचीन समय में सोना निकाला जाता था। सिनाई प्रदेश में भी खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। लिबियन मरु प्रदेश पश्चिम की ओर है। यह एक पहाड़ी पठार है। यहाँ बड़ी तीव्र हवायें चलती हैं और बालू के बड़े बड़े ढेरों को एक स्थान से उड़ा कर दूसरे स्थान पर इकट्ठा किया करती हैं। इस प्रदेश में बेडविन लोग इधर उधर अपने काफ़िलों के साथ घूमा करते हैं। पश्चिमी मरु प्रदेश में बहुत से ओसिस हैं। खार्गा ओसिस अपनी उपज के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ अंगूर और नारंगी की अच्छी उपज होती है।

नील नदी होने के कारण ही मिश्र देश हरा भरा रहता है। यदि नील नदी न होती तो यह केवल एक

उजाड़ बंजर रेगिस्तान ही होता। यहां वर्षा बहुत कम होती है। इसी कारण मिश्र देश "नील नदी का दान" कहलाता है। जिस प्रकार भारतीय लोग भारत का आदर करते हैं। उसी प्रकार नील नदी का आदर मिश्र निवासी करते हैं।

यद्यपि नील नदी में खरतूम से केरो तक में ६ बड़े प्रपात हैं तो भी अब इस नदी में जहाज़ चलते हैं। यात्रा जहाज़ द्वारा अस्वान तक बड़ी सुगमता पूर्वक की जा सकती है। जैसे जैसे नील नदी मुहाने की ओर आती है वैसे वैसे उसका पाट कम हो जाता है। खारतूम के समीप नील का पाट एक मील से अधिक है किन्तु केरो के समीप इसका पाट बहुत कम है।

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़्वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डिगामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्जी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—काग़ज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।